

Hindi Language Pedagogy

हिंदी भाषा शिक्षण शास्त्र

Most Important CTET, MPTET, UPTET,
REET and all State TET Exams

By - नितिन गुप्ता

Hello Friend , I am नितिन गुप्ता From – Nitin-Gupta.com

आज की हमारी PDF **Hindi Language Pedagogy** बिषय से संबंधित है , जो कि आपको CTET, MPTET Samvida Exam, UPTET, REET, HTET व अन्य State TET व Teaching Exmas के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी !! इस PDF को First Rank Publications द्वारा तैयार किया गया है !!

ऐसी ही PDF के लिये Google पर Search करें – “Nitin Gupta PDF”

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Free Download All Subject PDF

आप नीचे दिये Link से संबंधित Subject की सभी PDF को Download कर सकते हैं



Nitin Gupta Notes



Current Affairs PDF



Maths PDF



Reasoning PDF



History PDF



Gepgraphy PDF



Economics PDF



Polity PDF



Science PDF



Computer PDF



Environment PDF



General Hindi PDF



General English PDF



Child Development and Pedagogy PDF



MP GK PDF



UP GK PDF



Rajasthan GK PDF

हिन्दी शिक्षण

हिन्दी शिक्षण : FACT FILE

भाषा सीखने का मनोवैज्ञानिक क्रम	- सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना।
सुंदर लेखन हेतु उपयुक्त तरीका	- श्रुतिलेख लिखना
प्राथमिक स्तर पर मौखिक अभिव्यक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि	- चित्र वर्णन।
प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त विधियाँ	- चित्र वर्णन, अनुकरण विधि।
उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि	- उद्बोधन विधि।
माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियाँ	- प्रबोधन, प्रवचन, विचार-विमर्श, निर्देशन प्रणाली।
कविता शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ विधि (प्राथमिक स्तर)	- गीत एवं अभिनय प्रणाली।
व्याकरण शिक्षण की सरल एवं सुग्राह्य विधि	- आगमन (विश्लेषण) विधि।

1. काव्य की आत्मा- रस
2. भाषा का प्राथमिक रूप- मातृभाषा
3. भावभिव्यक्तिकरण का सर्वोत्कृष्ट रूप- बोलना
4. शब्द के अंत में जुड़ने वाले शब्द- प्रत्यय
5. शब्द के पूर्व में जुड़ने वाले शब्द- उपसर्ग
6. खंडानवय विधि कहते हैं- प्रश्नोत्तर विधि
7. देखो और कहो विधि में सर्वप्रथम शब्दों से परिचय कराया जाता है।
8. हिन्दी भाषा की लिपि- देवनागरी
9. साहचर्य विधि में भाषा की आरंभिक शिक्षा खेल-खेल में दी जाती है।
10. सर्वप्रथम छात्रों को शिक्षा, शुद्ध उच्चारण की देनी चाहिए।
11. हिन्दी भाषा की जननी- संस्कृत
12. शिक्षण प्रक्रिया का आखिरी चरण- मूल्यांकन
13. कक्षाध्यापक के सिद्धांत सूत्रों का सर्वप्रथम संग्रह करने वाले- हर्बर्ट स्पेंसर
14. शिक्षण में सर्वप्रथम उच्चारण पर बल देना चाहिए

हर्बर्ट स्पेंसर के भाषा शिक्षण सूत्र

- (1) ज्ञात से अज्ञात की ओर
- (2) सरल से जटिल की ओर
- (3) विशेष से सामान्य की ओर
- (4) विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
- (5) अनुभव से तर्क की ओर
- (6) आगमन से निगमन की ओर
- (7) मूर्त से अमूर्त की ओर

मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य एवं मूल्यांकन-

किसी भी कार्य का प्रारंभ करने से पूर्व भली प्रकार विचार करके उस कार्य से प्राप्त हो सकने वाली उपलब्धियों का अनुमान लगाया जाता है, वे उस कार्य के उद्देश्य कहलाते हैं। उद्देश्य एक प्रकार से सुविचारित ऐसे अंतिम लक्ष्य हैं, जिनकी पूर्ति के लिए हम किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित होते हैं।

उद्देश्य- भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है।

हिन्दी शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य - इसका तात्पर्य है- छात्रों को भाषा एवं साहित्य की बातों का ज्ञान देना।
 - (अ) ध्वनि शब्द वाक्य रचना का ज्ञान देना।
 - (ब) उच्च माध्यमिक स्तर पर निबंध, कहानी, नाटक, काव्य गीत, गद्य गीत आदि विद्याओं का ज्ञान देना।
 - (स) रचना कार्य के मौखिक एवं लिखित रूपों का ज्ञान देना।
 2. कौशलात्मक उद्देश्य- इन उद्देश्यों का संबंध भाषा के कौशलों से हैं जिनमें पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना, अर्थ ग्रहण करना आदि सम्मिलित हैं।
 - (अ) सुनकर अर्थ ग्रहण करना।
 - (ब) शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करना।
 - (स) गद्य-पद्य पढ़कर अर्थ ग्रहण करना।
 - (द) बोलकर भावाभिव्यक्ति करना।
 - (य) लिखकर भावाभिव्यक्ति करना।
- व्यवहारगत परिवर्तन-**
- (अ) छात्र धैर्यपूर्वक सुन सकेगा तथा सुनने के शिष्टाचार का पालन करेगा।
 - (ब) शब्दों, मुहावरों, उक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ व भाव समझ सकेगा।
 - (स) स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के अनुसार अर्थ ग्रहण कर सकेगा।
 - (द) महत्वपूर्ण विचारों, भावों, तथ्यों का चयन कर सकेगा।
 - (य) अभिव्यक्ति के ढंग को समझ सकेगा।
 - (र) भावों, विचारों, तथ्यों का मूल्यांकन कर सकेगा।
3. रसात्मक एवं समीक्षात्मक उद्देश्य-
 - (अ) इन उद्देश्यों में दो उद्देश्य आते हैं- साहित्य का रसास्वादन और साहित्य की सामान्य समालोचना। इन उद्देश्यों का संबंध उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं से ही हैं।

4. सृजनात्मक उद्देश्य -

- (अ) सृजनात्मक उद्देश्य का तात्पर्य है- छात्रों को साहित्य सृजन की प्रेरणा देना और उन्हें रचना में मौलिकता लाने की योग्यता का विकास करने के लिए प्रेरित करना।
 - (ब) इस कार्य के लिए निबंध, कहानी, संवाद, पत्र, उपन्यास एवं कविता को माध्यम बनाया जा सकता है।
- व्यवहारगत परिवर्तन-**
- (अ) छात्र विषय एवं उसके अंतर्गत भावों एवं विचारों के लिए उपयुक्त साहित्य की विधा का चयन कर सकेगा।
 - (ब) वह स्वानुभूत भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त कर सकेगा।
 - (स) वह ग्रहित व स्वानुभूत भावों तथा विचारों को अपने ढंग से अभिव्यक्त कर सकेगा।
 - (द) वह विषय तथा प्रसंग के अनुकूल भाषा एवं शैली का उपयोग कर सकेगा।

क्या आप जानते हैं?

- (1) शब्द भंडार में वृद्धि के लिए गद्य शिक्षण उत्तम है।
- (2) भाषा प्रयोगशाला का उपयोग उच्चारण सुधार हेतु किया जाता है।
- (3) प्राथमिक कक्षाओं में रचना शिक्षण की खेल विधि का विकास हैनरी कॉल्डवेल कुक ने किया।
- (4) प्राथमिक कक्षाओं के लिए रचना शिक्षण की प्रमुख विधि उद्बोधन पद्धति है।
- (5) नाट्य पद्धति, व्याख्या पद्धति, अभिनय पद्धति आदि नाटक शिक्षण के लिए प्रमुख शिक्षण विधियाँ हैं।
- (6) द्रुत पाठ के लिए उपन्यास, जीवनी तथा कहानी का शिक्षण उपयोगी माना गया है।

5. अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्य -

(अ) इस उद्देश्य का तात्पर्य है कि छात्रों में उपयुक्त दृष्टिकोण एवं अभिवृत्तियों का विकास किया जाये।

उदाहरणार्थ- भाषा एवं साहित्य में रुचि, सद्वृत्तियों का विकास।

(ब) सद्वृत्तियों का विकास करने का अर्थ है छात्रों में आस्था, श्रद्धा, साहित्य प्रेम, देशप्रेम, मानव प्रेम, सहृदय, संवेदनशीलता का विकास करना।

गद्य शिक्षण

गद्य शब्द संस्कृत भाषा की गद् धातु से बना है जिसका अर्थ है स्पष्ट कहना। साहित्य दर्पण के अनुसार वृत्त-बंध-हीन रचना गद्य है।

अंग्रेजी में गद्य को प्रोज कहते हैं।

गद्य शिक्षण विधि

प्रस्तावना- गद्य शिक्षण को प्रारंभ करने का प्रथम सोपान प्रस्तावना होता है। प्रस्तावना को वार्तालाप से प्रारंभ किया जा सकता है तथा कोई भी कहानी संक्षेप में सुनाई जा सकती है तथा पाठ के उद्देश्य से छात्रों को परिचित कराया जाता है।

वाचन- प्रस्तावना व उद्देश्य कथन के पश्चात् अध्यापक द्वारा उचित आरोह-अवरोह का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण सहित विरामादि चिह्नों का ध्यान रखते हुए प्रभावपूर्ण ढंग से आदर्श वाचन किया जाता है।

काठिन्य निवारण- वाचन के पश्चात् गद्य भाग के कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण आवश्यक होता है। इसके लिए निम्नांकित प्रविधियाँ प्रयोग में ली जाती हैं-

1. चित्र दिखाना
2. प्रतिमूर्ति दिखाकर
3. मानचित्र द्वारा
4. प्रत्यक्ष पदार्थ द्वारा
5. संकेत द्वारा
6. अभिनय द्वारा

7. विलोम कथन

8. संधि विच्छेद

9. समास विग्रह

10. व्याख्या आदि।

विश्लेषण- विश्लेषण का कार्य प्रश्नोत्तर के माध्यम से किया जाता है। विचार विश्लेषण के बाद पुनः अध्यापक द्वारा आदर्शवाचन और छात्रों द्वारा सस्वर वाचन किया जाना चाहिए।

काव्य शिक्षण

काव्य आत्माभिव्यक्ति होती है जो कि हृदय की वस्तु है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि कविता आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जो छंदोबद्ध तथा नियमित गति में होने के कारण ताल और लय पर चलती है।

कविता शिक्षण की विधियाँ

गीत तथा अभिनय प्रणाली-

1. यह प्रणाली प्रारंभिक कक्षाओं में बाल-गीतों के लिए प्रयोग में लायी जाती है।
2. अभिनय प्रधान पदों में बालक उचित अंग संचालन के द्वारा भाव व्यक्त करना सीख जाता है।

अर्थबोध प्रणाली- इस प्रणाली में शिक्षक स्वयं कविता का अर्थ बताता है।

व्याख्या विधि-

1. इस प्रणाली में अध्यापक एक-एक पद लेकर उसका अर्थ करता हुआ कवि का दार्शनिक मत, प्रवृत्ति, रचना शैली, परिस्थिति, कविता की भाषा, अलंकार भाव, रस आदि की व्याख्या करके पद का अर्थ स्पष्ट करता है।
2. इसका प्रयोग माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में होता है।

खंडानव्यं प्रणाली-

1. इसको प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहा जाता है।
2. इस प्रणाली का प्रयोग केवल वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पद्यों को पढ़ाने में किया जाता है।

❧ व्यास प्रणाली-

1. यह प्रणाली उच्च श्रेणी की भाव प्रधान कविताओं को पढ़ाने के लिए प्रयोग में ली जाती है।
2. भावात्मक कविताओं में इस प्रणाली का प्रयोग सर्वोत्तम होता है।

❧ तुलनात्मक प्रणाली- इस प्रणाली में सम-भाषा कवि, भिन्न-भाषा कवि की तुलना तथा भाव-तुलना द्वारा साम्य और असाम्य दोनों का विवेचन किया जाता है। इससे विद्यार्थियों में विवेचन तथा तर्क शक्ति का विकास होता है।

❧ समीक्षा प्रणाली-

1. इस प्रणाली में अध्यापक प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग कर अन्य सहायक पुस्तकों की सहायता से विद्यार्थियों को कवि की रचनाओं तथा कविताओं की समीक्षा करने को कहता है।
2. यह प्रणाली उच्च कक्षाओं में उपयोगी होती है।

कहानी शिक्षण

❧ हिन्दी साहित्य का सबसे अधिक मनोरंजक अंग कहानी है।

❧ कहानी का उद्देश्य बोलने की आदत डालना तथा विचारों की क्रमबद्ध शक्ति बढ़ाना है।

❧ कहानी पाठ के संभाव्य पाठरूप-

1. मौखिक कहानी पाठ
2. रचना पाठ
3. गहन अध्ययननिष्ठ पाठ
4. संवादात्मक पाठ

❧ कहानी के अंग-

1. शिक्षक द्वारा कहानी कहना
2. बालकों द्वारा कहानी कहलवाना
3. बालकों द्वारा कहानी लिखवाना

वाचन

❧ भाषा शिक्षण में हम पहले लिखने पर जोर देते हैं जिससे बच्चा शब्दों की या अक्षरों की वास्तविक बनावट को ठीक प्रकार से समझ सके और उसके स्वरूप को स्मरण कर अभ्यास द्वारा यथा समय प्रयोग कर सके। (V.Imp.)

❧ वाचन के उद्देश्य-

1. बालकों को स्वर के आरोह-अवरोह का अभ्यास कराया जाना चाहिए ताकि वे यथा अवसर भावों के अनुकूल स्वर को उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकें।
2. स्वयं बालक अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए भावानुसार स्वर का उचित आरोह-अवरोह साध सकें।
3. बालकों के अक्षर, शब्दोच्चारण, उचित ध्वनि, बल तथा सुस्वरता का उचित संस्तर करना।

❧ अध्यापक को आदर्श सस्वर वाचन करना चाहिए तथा उसका अनुकरण छात्र करें।

क्या आप जानते हैं?

- (1) सौंदर्यात्मक कविता या पद्य शिक्षण का अंतिम उद्देश्य होता है।
- (2) अंत्याक्षरी प्रतियोगिताएँ काव्य में रुचि विकसित करने हेतु एक उत्तम उपाय है।
- (3) आगमन-निगमन विधि व्याकरण शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है।
- (4) संधि-समास पढ़ाने हेतु आगमन-निगमन विधि सर्वोत्तम शिक्षण पद्धति है।
- (5) आदर्श अभिनय विधि नाटक शिक्षण की प्रमुख विधि है।

सस्वर वाचन

आदर्श वाचन (शिक्षक द्वारा)

अनुकरण वाचन (विद्यार्थियों द्वारा)

वैयक्तिक वाचन

सामूहिक वाचन

- जब बालक सस्वर वाचन कर रहा हो, तो पढ़ना रोककर संशोधन करने की शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। अवतरण समाप्त हो जाने पर उच्चारण शुद्ध कराना चाहिए।
- उत्तम सस्वर वाचन से बालक में आत्मविश्वास जागृत होता है तथा भाषा प्रयोग की क्षमता में वृद्धि होती है।
- मौन पाठ का अवसर बाद में आता है। छात्रों को मौन वाचन का पर्याप्त अवसर देना चाहिए और मौन वाचन का मूल्यांकन करने के लिए छात्रों से प्रश्न करने चाहिए।
- मौन वाचन का उद्देश्य है कि बालक वाचन की

गति का विकास कर सके तथा पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण कर सके।

- मौन वाचन द्वारा एक छात्र दूसरे छात्र के वाचन में बाधा उपस्थित नहीं करता। सामूहिक वाचन के लिए मौन वाचन सर्वोत्तम है। मौन वाचन द्वारा स्वाध्याय की आदत पड़ती है।
- प्रारंभिक कक्षाओं में सस्वर वाचन अधिक लाभदायक है।
- उच्च शिक्षा के लिए मौन वाचन लाभदायक रहता है।
- माध्यमिक कक्षाओं में वाचन वैयक्तिक ढंग से कराया जाता है।

वाचन की विधियाँ

- | | |
|-------------------------------|---|
| 1. देखो और कहो विधि- | इस विधि में एक पूरा शब्द श्यामपट्ट पर लिख दिया जाता है और अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान कराई जाती है। |
| 2. अक्षर बोध विधि- | इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित है। जब वर्ण पहचान लिया जाता है तो बालक को शब्द दे दिया जाता है। जैसे- क, म, ल अक्षरों से मिलकर कमल शब्द। |
| 3. ध्वनि साम्य विधि- | इसमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ सीखाये जाते हैं। जैसे- भ्रम, क्रम, भ्रम आदि। |
| 4. अनुध्वनि विधि- | इसमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ ही सीखाये जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है और छात्र उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करता है। |
| 5. भाषा शिक्षण की यंत्र विधि- | यह नवीन विधि है। इसमें ग्रामोफोन का प्रयोग किया जाता है जिसे सुनकर बालक उसी का अनुकरण करके पढ़ने का अभ्यास करते हैं। इससे उच्चारण में एकरूपता व पढ़ने के क्रम में समानता आती है। |
| 6. समवेत पाठ विधि- | इस विधि से छोटे पद्य तथा गीत सीखाने में सुविधा होती है। |
| 7. संगति विधि- | इस विधि का प्रयोग मॉन्टेसरी ने किया था। इसमें बहुत-सी वस्तुओं, चित्रों, खिलौनों आदि के आगे उनके नाम कार्डों पर लिखकर रखे जाते हैं। बाद में ये कार्ड बच्चों को दे दिये जाते हैं तथा उन्हें कहा जाता है जिस वस्तु का जो नाम है, उसके आगे वह कार्ड रखा जाये। |

वाचन

- | | |
|-----------------|--|
| 1. आदर्श वाचन- | जब पाठ्य सामग्री को अध्यापक स्वयं वाचन करके छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, तो उसे आदर्श वाचन कहते हैं। |
| 2. अनुकरण वाचन- | आदर्श वाचन के बाद छात्रों द्वारा पाठ का अनुकरण वाचन किया जाता है। |

3. समवेत वाचन-	सामूहिक वाचन को समवेत वाचन कहा जाता है। प्रारंभिक कक्षाओं के लिए यह उपयुक्त है।
4. मौन वाचन-	बिना होंठ हिलाए चुपचाप पढ़ते हुए अधिक से अधिक अर्थ ग्रहण करने को मौन वाचन कहते हैं।
5. गंभीर मौन वाचन-	प्रत्येक शब्द वाक्य पर गंभीरता पूर्वक मनन व वाचन करना, जब किसी पाठ्य सामग्री की तह तक पहुँचना होता है।
6. द्रुत मौन वाचन-	जब विस्तृत अध्ययन किया जाता है, तब इस तरह का वाचन किया जाता है।

वाचन दोषों को दूर करने की विधियाँ

1. आवृत्ति-पुनरावृत्ति विधि-	बार-बार अभ्यास करके ठीक उच्चारण का अभ्यास कराना।
2. स्थान परिवर्तन-	अशुद्ध बोलने वाले बालकों के बीच से हटाकर शुद्ध बोलने वाले बालकों के मध्य रखना।
3. अस्पष्टता निवारण-	शीघ्र तथा अस्पष्ट बोलने से रोककर धीरे-धीरे अक्षर-अक्षर स्पष्ट बोलने का अभ्यास।
4. चिकित्सा कराना-	शारीरिक रूप से असम्मत बच्चों की चिकित्सा कराना तथा संरक्षकों को सूचित करना।

अशुद्ध उच्चारण के कारण

छात्र के उच्चारण में अनेक दोष आ जाते हैं और वे अशुद्ध उच्चारण करने लगते हैं। अशुद्ध उच्चारण के प्रायः निम्न कारण होते हैं-

- ❖ ध्वनि-लोपन - किसी ध्वनि का लोप कर देना।
- ❖ ध्वनि-विकृति- किसी ध्वनि का अल्प उच्चारण या अति उच्चारण करना।
- ❖ ध्वनि का सही ज्ञान न होना।
- ❖ उच्चारण के साधारण नियमों का ज्ञान न होना।
- ❖ सुर, अनुतान, बलाघात आदि का अनुचित प्रयोग।
- ❖ दोषयुक्त श्रवण प्रक्रिया (कम सुनना)
- ❖ कुछ अन्य शारीरिक विकृतियाँ- ओष्ठ विकृति, दंतक्षय, कोमल तालु अभाव, कालत्व अभाव या लघुत्व।
- ❖ स्थानीय बोलियों का प्रभाव।
- ❖ शब्दलाघव की प्रवृत्ति।
- ❖ अध्यापक द्वारा निर्देशन की कमी।

अशुद्ध उच्चारण सुधार

यदि अध्यापक निम्न उपाय करें तो छात्रों के उच्चारण में सुधार हो सकता है-

- ❖ उच्चारण सुधार का प्रयास प्रारंभिक स्तर से ही होना चाहिए। प्रारंभ में उच्चारण अशुद्ध हो जाने पर बाद की कक्षाओं में सुधारना कठिन हो जाता है।
- ❖ जिन छात्रों का उच्चारण अशुद्ध हो उनका अनुकरण अन्य छात्र न करने पायें, इसका ध्यान रख जायें।
- ❖ मौखिक कार्य का उच्चारण सुधार में विशेष महत्व है। अतः कक्षा में मौखिक कार्य के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जायें।
- ❖ यदि संकोच, डर या आत्मविश्वास की कमी के कारण उच्चारण अशुद्ध हो रहा है तो अध्यापक को चाहिए कि छात्र के प्रति सहानुभूति एवं धैर्य के साथ व्यवहार करें। आवश्यकता पड़ने पर मनोविज्ञान विशेषज्ञ से परामर्श लिया जा सकता है।
- ❖ छात्रों में शुद्ध उच्चारण करने की आकांक्षा जागृत की जाये। उन्हें परिनिष्ठित उच्चारण करने के लिए प्रेरित किया जाये।

- अध्यापक अपने उच्चारण में भी सुधार करे। उच्चारण शिक्षा में अनुकरण का विशेष महत्त्व है।
- साधारणतया अशुद्ध उच्चारण की जाने वाली ध्वनियों की सूची बनाकर प्रत्येक वर्ष के आरंभ में उच्चारणाभ्यास करा लिया जाये ताकि बाद में वाचन तथा भाषण के समय ध्यानाकर्षण तथा अभ्यास चलता रहे।
- उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन करके पुरस्कार की व्यवस्था की जाये। इससे छात्र उच्चारण सुधारने का प्रयास करेंगे।
- आवश्यकता हो तो चिकित्सकों की सहायता ली जाये। शारीरिक विकृतियों की दशा में तो चिकित्सकों का परामर्श अनिवार्य है।
- उच्चारण के कतिपय नियमों का छात्रों को ज्ञान करा देना चाहिए। यहाँ उच्चारण के कुछ उपयोगी नियमों पर विचार किया जा रहा है।

उच्चारण के कुछ नियम

- हिन्दी वर्णमाला की जानकारी होनी चाहिए। हिन्दी वर्णमाला में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वर हैं, ऐ (अए) और औ (अओ) बाद की विकसित ध्वनियाँ हैं। ए और ओ हिन्दी में दीर्घ ध्वनियाँ हैं। स्वरों का उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना होता है। स्वरों के अतिरिक्त व्यंजन भी हैं। व्यंजनों का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है। हिन्दी में निम्न व्यंजन हैं-

क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व

श, ष, स, ह

उपर्युक्त व्यंजनों के अतिरिक्त हिन्दी में निम्न नयी ध्वनियाँ भी हैं-

ड़, ढ़, ण़, म्ह,

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ (अरबी-फारसी के शब्दों में)

ऑ (अंग्रेजी के तत्सम शब्दों में)

क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन भी हैं।

- ध्वनियों के उच्चारण-स्थान का ज्ञान उच्चारण सीखने में सहायक होता है। स्थान का संक्षिप्त विवरण निम्न हैं-

व्यंजन	उच्चारण स्थान	स्वर
क, ख, ग, घ, ङ, ह	कण्ठ	अ, आ, ऑ
च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालु	इ, ई
ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ष	मूर्धा	ऋ
त, थ, द, ध	दंत	
न, र, ल, स, ज	वर्त्स (ऊपर के दाँतों के अंदर के मसूढ़े)	
प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ	उ, ऊ
	कण्ठ-तालु	ए, ऐ
	कण्ठ-ओष्ठ	ओ, औ
व, फ़	दंत-ओष्ठ	
क, ख, ग	जिह्वा मूल	

- उच्चारण की दृष्टि से पाँचों वर्गों के अंतिम अक्षर अनुनासिक हैं। अनुनासिक वर्णों के उच्चारण में नासिक का भी प्रयोग किया जाता है।
- य, र, ल, व आधे स्वर और आधे व्यंजन के रूप में उच्चरित होते हैं। इन्हें अंतःस्थ वर्ण कहते हैं।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के कारण

- ☞ छात्रों के उच्चारण का अशुद्ध होना।
 - ☞ लिखने में शीघ्रता करना।
 - ☞ सुलेख का अभ्यास न करना।
 - ☞ क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव।
 - ☞ वर्णों में उच्चारण की कुछ समता होना।
 - ☞ मात्राओं का ठीक से ज्ञान न होना।
 - ☞ शब्द-लाघव की प्रवृत्ति।
 - ☞ शारीरिक विकार।
 - ☞ त्रुटियों का उचित संशोधन न होना।
 - ☞ लिखते समय मन की अशांति, आवेश एवं भावातिरेक।
 - ☞ पुस्तकों में मुद्रण की अशुद्धियाँ।
 - ☞ व्याकरणिक नियमों के ज्ञान का अभाव।
 - ☞ रूप-रचना का ज्ञान न होना।
 - ☞ लिखने में असावधानी।
 - ☞ लिपि में समुचित ज्ञान का अभाव।
- उपर्युक्त अशुद्धियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

तकनीकी कारण-

1. लिपि अज्ञानता
2. उच्चारण वैषम्य
3. संयुक्ताक्षरों का प्रयोग
4. व्याकरण की अनभिज्ञता
5. सर्वमान्य रूपों का अभाव

क्या आप जानते हैं?

- (1) व्याख्यान विधि शिक्षण की प्राचीन विधि है।
- (2) मेजिक लैण्टर्न यंत्र के द्वारा छोटे चित्र बड़े करके परदे के ऊपर प्रदर्शित किए जाते हैं।
- (3) निबंधात्मक परीक्षा छात्र की उच्च अभिव्यक्ति स्तर को जाँचने की सर्वश्रेष्ठ तकनीक है।
- (4) महाभारत, रामायण आदि प्रकरण पढ़ाने की सर्वश्रेष्ठ विधि- कहानी विधि।

व्यावहारिक कारण-

1. संशोधन कार्य का अभाव
2. प्रयोगकर्ता की असावधानी
3. अभ्यास का अभाव
4. वातावरण का प्रभाव
5. भाषा के क्षेत्र में सरकारी प्रयोग

वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को सुधारने के उपाय

- ☞ छात्रों को लिखित कार्य देना व उसका बड़ी सावधानी से संशोधन करना। [RPSC T.Ex. (III Gr.)-2007]
- ☞ छात्रों द्वारा अशुद्ध लिखे गये शब्दों के रूपों को कई बार लिखाना।
- ☞ वर्तनी संबंधी व्याकरणिक नियमों का ज्ञान कराना तथा रूप रचना का आवश्यक ज्ञान देना।
- ☞ श्यामपट्ट पर लिखते समय बहुत भ्रमपूर्ण शब्दों की सूची तैयार कराना तथा उन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों को शुद्ध लिखने का अभ्यास कराना।

क्या आप जानते हैं?

- (1) किंडर गार्टन, मॉन्टेसरी तथा खेल विधि पूर्व प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने की सर्वोत्तम पद्धति हैं।
- (2) प्रयोगशाला पद्धति में भाषा शिक्षण यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- (3) अक्षर ज्ञान वाचन सीखाने की सबसे प्राचीन पद्धति है।
- (4) वार्तालाप या संवाद मौखिक रचना कार्य की प्रमुख विधि है।
- (5) मॉरीशन ने हिन्दी शिक्षण में आत्मिकरण का सम्प्रत्यय दिया है।
- (6) भाषा कौशलों में सर्वप्रथम उच्चारण कौशल का विकास करना चाहिए।

रचना शिक्षण की विधियाँ

- | | |
|-------------------------|---|
| (1) प्रश्नोत्तर विधि- | यह विधि प्रारंभिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त रहती है। |
| (2) प्रवचन विधि- | उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त। |
| (3) चित्र वर्णन विधि- | स्वतंत्र रचना के प्रारंभ का पहला सोपान है। यह रुचिपूर्ण विधि है जिसमें मौखिक एवं लिखित दोनों रचना की जाती है। |
| (4) रूपरेखा वर्णन विधि- | इस विधि में शिक्षक परिचित विषय का सारांश या उसकी रूपरेखा प्रस्तुत करता है। बालक स्वतंत्र रचना करता है। |
| (5) विषय प्रबोधन विधि- | उच्च कक्षाओं में नाटक व कविता की रचना शिक्षण के लिए इसका उपयोग किया जाता है। |
| (6) मंत्रणा विधि- | इसे अध्ययन प्रणाली भी कहते हैं जिसमें शिक्षण रचना संबंधी कार्यों में मंत्री का काम करता है। |

व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

- | | |
|---|--|
| (1) निगमन विधि (सूत्र प्रणाली)- | इस विधि में पहले नियम का सूत्र बता दिया जाता है। रटने पर अधिक बल दिया जाता है। |
| (2) पाठ्यपुस्तक विधि- | सिद्धान्त विधि के इस उन्नत रूप में व्याकरण की पाठ्य पुस्तकें छात्रों को पढ़ने के लिए दी जाती है। वर्तमान में विद्यालय में यह प्रणाली प्रचलित है। |
| (3) आगमन (विश्लेषण) विधि- | उदाहरण देकर नियम स्थापित किया जाता है। यह विधि व्याकरण शिक्षण की सरल व सुग्राह्य विधि है। |
| (4) प्रासंगिक प्रणाली (प्रयोग प्रणाली)- | इस विधि में व्याकरण के नियम व पुस्तक की आवश्यकता नहीं होती। गद्य शिक्षण कराते समय ही व्याकरण के नियम उदाहरण देकर समझाये जाते हैं। |
| (5) भाषा संसर्ग विधि- | इस विधि में छात्रों को अच्छे लेखकों की पुस्तकों के संसर्ग में लाया जाता है। इससे भाषा शुद्ध एवं परिष्कृत होती है। |

विशेष- 1. व्याकरण शिक्षण की वैज्ञानिक विधि आगमन (विश्लेषण) विधि है।

2. व्याकरण का शिक्षण उच्च प्राथमिक कक्षाओं से आरंभ करना उचित है।

नाटक शिक्षण की विधियाँ

- | | |
|----------------------------|---|
| (1) आदर्श वाचन विधि- | इस विधि में अध्यापक नाटक का वाचन, भावानुकूल तथा पात्रानुकूल स्वयं करता है। काठिन्य निवारण वाचन के बाद होता है। |
| (2) पात्रानुसार वाचन विधि- | आदर्श वाचन के बाद पात्रानुकूल बालक विभिन्न पात्रों के संवादों को भावानुकूल पढ़ते हैं। इस विधि के माध्यम से नाटक शिक्षण में उद्देश्यों की स्थापना की जा सकती है। |
| (3) व्याख्या विधि- | उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त इस विधि से शिक्षण नीरस बन जाता है। बालक निष्क्रिय हो जाते हैं। |

- (4) कक्षा अभिनय विधि- कक्षा में पात्रानुसार वाचन विधि के साथ-साथ इसमें भावानुकूल वाचन किया जाता है। इसमें अंग संचालन पर भी बल दिया जाता है। इस विधि में शिक्षण रोचक, अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने वाला तथा व्यक्तित्व में निखार लाता है।
- (5) रंगमंच अभिनय विधि- समय, साधन, श्रम एवं व्यय साध्य होने के कारण कक्षा शिक्षण के उपयुक्त नहीं।

लिखित कार्य : विशेष स्मरणीय बिन्दु

- (1) बालकों को पठित ज्ञान का अनुभूत विषय से सम्बद्ध लिखित कार्य दिया जाता है।
- (2) लिखित कार्य की मात्रा और स्वरूप बालकों की कक्षा और स्तर के अनुरूप हो।
- (3) लिखित कार्य को कभी भी दंड के रूप में नहीं दिया जाये।
- (4) शिक्षक द्वारा लिखित कार्य का संशोधन करते समय वर्तनी संबंधी अशुद्धियों एवं वाक्य रचना पर विशेष ध्यान दिया जाये।
- (5) लिखित कार्य बालकों के लिए उत्साहवर्द्धक, प्रेरणादायक और चिंतन तथा रचना शक्ति का विकास करने वाला होना चाहिए।

मौखिक भाव प्रकाशन

- भावों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतः सर्वप्रथम उच्चारित भाषा होती है।
- मौखिक भाव प्रकाशन में निम्न दो उपादानों का होना अनिवार्य है-
 1. अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करना अथवा भाव प्रकाशन करना।
 2. दूसरे के विचारों को सुनकर उसके मनोभावों को समझना या भाव ग्रहण करना।
- बातचीत करना सीखाते समय अध्यापक को बातचीत के गुणों पर ध्यान रखना चाहिए।
- स्वाभाविकता भाषा का महत्वपूर्ण गुण है।
- बातचीत सामान्य विषयों पर होती है।
- वार्तालाप के विषय गंभीर होते हैं। वार्तालाप का स्तर बातचीत की अपेक्षा ऊँचा होता है।

- वार्तालाप में कथोपकथन अधिक तर्कपूर्ण एवं प्रभावशाली होता है। वार्तालाप के लिए कोई निश्चित समय निर्धारित करना आवश्यक होता है।
- वार्तालाप में विषयांतर नहीं होने दिया जाता है। वार्तालाप का विषय कोई चित्र, कहानी, चलचित्र, पात्र आदि हो सकता है।
- वार्ता- किसी विषय पर किसी विशेषज्ञ के कथन को वार्ता कहा जाता है। उदाहरण- कृषि या विज्ञान संबंधी वार्ता।

मौखिक भाव प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्य

- बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं परिमार्जित हो।
- वे अपने मनोभावों को सरलता तथा स्पष्टता से दूसरों पर प्रकट कर सकें।
- बालकों का संकोच उनकी झिझक तथा आत्महीनता की भावना दूर हो सके।

मौखिक भाव प्रकाशन की शिक्षा देने की विधि

- मौखिक भाव प्रकाशन की शिक्षा देने के प्रारंभ में अशुद्धता की ओर ध्यान न देकर प्रवाह के साथ आत्म प्रकाशन को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- बालकों के सामने उत्तम प्रकार से बोलने का उदाहरण उपस्थित किया जाना चाहिए।
- बैलर्ड का कथन है कि पहला और अंतिम वाक्य कंठस्थ कर लेना चाहिए। पहले वाक्य से आत्मविश्वास आता है और अंतिम से श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।
- लेखन शैली- लेखन शैली के लिए भी मौखिक भाव प्रकाशन और उसकी शुद्धता का होना आवश्यक है। यदि बालक अपने भावों, उद्गारों एवं अपनी इच्छाओं को सरलता, शुद्धता और स्पष्टता से दूसरों

पर व्यक्त कर सकते हैं, तो उसी प्रकार वे शुद्ध व स्पष्ट लिख भी सकते हैं। अतः शुद्ध लेखन के लिए शुद्ध बोलने का अभ्यास भी कराया जाना चाहिए।

☛ मौखिक भाव प्रकाशन के समय शिक्षक को निम्न सावधानियाँ रखनी चाहिए-

1. उच्चारण के अभ्यास के लिए अथवा त्रुटियों को ठीक कराने के लिए स्वर यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए।
2. यदि कोई बालक प्राकृतिक कारणों से शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है, तो उसकी चिकित्सा कराई जानी चाहिए।
3. शिक्षक बोलने का आदर्श दृष्टांत उपस्थित करे जिसमें तेजी, क्रोध अथवा शीघ्रता न हो।
4. बालक को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
5. बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने व पढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए।
6. भाषा में सरलता, मधुरता, भावानुसार वाणी के उतार-चढ़ाव पर ध्यान देना चाहिए।
7. भूल सुधार का कार्य विशेष सावधानी से किया जाना चाहिए। इसके लिए जब बालक बोलते रहें, तो शिक्षक भूलों का संग्रह करते रहें और अंत में इन भूलों का सुधार करें और यदि आवश्यक है तो अभ्यास कराया जाना चाहिए।

लेखन शिक्षण

- ☛ महात्मा गाँधी के शब्दों में- "सुलेख व्यक्ति की शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है।"
- ☛ फ्रोबेल के अनुसार पढ़ने की क्रिया पहले और लिखने की क्रिया बाद में होनी चाहिए।
- ☛ बाल मनोवैज्ञानिक श्रीमती मॉन्टेसरी के अनुसार लिखना पहले तथा पढ़ना बाद में सीखाया जाना चाहिए।

लेखन शिक्षण विधि

- ☛ रूपरेखा अनुकरण विधि- इस विधि में शिक्षक कॉपी, श्यामपट्ट या सलेट पर चॉक या पेंसिल से बिन्दू रखते हुए शब्द या वाक्य लिख देता है और छात्रों को उन निशानों पर पेंसिल या चॉक फेरने को कहा जाता है जिससे वह वाक्य या शब्द उभर आये।
- ☛ स्वतंत्र अनुकरण विधि- इसमें अध्यापक श्यामपट्ट, कॉपी या सलेट पर अक्षरों को लिख देता है तथा बालक अक्षरों को देखकर उसका अनुकरण करते हैं। प्रारंभ में बच्चे इसी विधि से लिखना सीखते हैं।
- ☛ मॉन्टेसरी विधि- मॉन्टेसरी ने लिखना सीखाने में आँख, कान और हाथ तीनों के प्रयोग पर बल दिया है।
- ☛ जेकॉटॉट विधि- इसमें शिक्षक बालकों द्वारा पढ़े हुए वाक्यों को स्वयं लिखकर छात्रों को लिखने के लिए दे देता है।

अनुलेख

- ☛ अनुलेख का अर्थ है किसी लिखावट के पिछे या बाद में लिखना। अनुलेख का प्रारंभिक कक्षाओं में विशेष महत्त्व है। कक्षा 3 तक अनुलेख का अभ्यास कराया जा सकता है।

प्रतिलेख

- ☛ प्रतिलेख में छात्र स्वतंत्र रूप से किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका के किसी भाग का अनुकरण करके अपनी कॉपी में लिखता है। कक्षा 4, 5 और 6 में प्रतिलेख का अभ्यास कराया जा सकता है।

श्रुतलेख

- ☛ श्रुतलेख सुना हुआ लेख है। इसमें अध्यापक बोलता जाता है और छात्र सुनकर बोली हुई सामग्री लिखता है। सुनने-समझने की योग्यता के शिक्षण और

परीक्षण का श्रुतलेख अच्छा साधन है। इसका उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना है।

हिन्दी में अनुवर्तन कार्य

लिखित कार्य में संशोधन के पश्चात् जो त्रुटियाँ या अशुद्धियाँ शुद्ध की जाती हैं, उनका पुनरावलोकन छात्र फिर से करे और शुद्ध किये गये शब्द वाक्य विराम चिह्न, व्याकरणिक अशुद्धि आदि को फिर सही लिखे। इस निमित्त जो अभ्यास दिया जाता है, वह अनुवर्तन कार्य कहलाता है। अनुवर्तन हेतु शब्दाभ्यास, वर्तनी का अभ्यास इत्यादि करके अनुवर्तन कार्य सम्पन्न कराया जाता है।

जिन अशुद्धियों का बालक अधिकतर करते हों, उन्हें कक्षा में सभी छात्रों के सामने शुद्ध रूप से स्पष्ट किया जाना चाहिए। किसी लिखित कार्य की भाषा संबंधी सब अशुद्धियों को बालकों को बुलाकर बता देना चाहिए।

नाटक शिक्षण

नाटक- नट् धातु से नाटक शब्द की उत्पत्ति हुई है। नट् का अर्थ होता है- अभिनय।

नाटक वह प्रयोग है जिसमें किसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक अथवा कल्पित कथा के आधार पर, नाट्यकार द्वारा रचित रचना के अनुसार, नाट्य प्रयोग द्वारा प्रशिक्षित नट, जब रंगमंच पर संगीत तथा अभिनय आदि के द्वारा रस उत्पन्न करके दर्शकों का मनोविनोद करते हुए, उन्हें उपदेश और मानसिक शांति प्रदान करते हैं, तब इस प्रक्रिया को नाटक या रूपक कहते हैं।

नाटक शिक्षण के उद्देश्य-

- नाटक का प्रमुख उद्देश्य जनता का मनोरंजन करने के साथ-साथ कुछ आदर्श की बातें बताना हैं।
- नाटक अनुकरण पर आधारित होता है। अनुकरण की प्रवृत्ति को शांत करना इसका उद्देश्य है।

- आत्म प्रदर्शन, आत्म प्रकाशन आदि का अवसर प्रदान करना।
- समाज की सुखद और दुःखद परिस्थितियों में मानसिक साझेदारी कराना।
- बालकों को समायोजित व्यवहार तथा नैतिकता की शिक्षा नाटकों के माध्यम से बड़ी सरलतापूर्वक दी जा सकती है।
- अभिनव द्वारा शुद्ध उच्चारण, प्रभावपूर्ण भाव प्रकाशन तथा भाषा प्रयोग की योग्यता का विकास करना।
- नाटक एक विधा है जबकि अभिनय से तात्पर्य भूमिका निर्वहन से हैं अर्थात् जब किसी लोकप्रसिद्ध व्यक्ति के चरित्र का निर्वाह पात्र उसी के अनुकूल मंच पर करता है तो उसे अभिनय करना कहते हैं।

नाटक के प्रमुख तत्त्व :-

- नाटक के 6 तत्त्व प्रमुख होते हैं-
 1. कथावस्तु
 2. पात्र
 3. कथोपकथन - नाटक का विकास कथोपकथन पर ही आधारित है।
 4. देशकाल या वातावरण
 5. नाटक का उद्देश्य
 6. शैली (नाटक की जान)

नाटक शिक्षण की विधियाँ :-

1. आदर्श वाचन विधि-
आदर्श वाचन विधि के अनुसार समस्त नाटक, एकांकी, संवाद आदि का वाचन कक्षा में स्वयं करता है। अध्यापक का मुख्य उद्देश्य नाटककार के कथ्य को प्रभावशाली ढंग से बालकों तक पहुँचाना होता है।
2. रंगमंच अभिनय प्रणाली -
(अ) नाटक शिक्षण की सबसे उत्तम विधि है।
(ब) इस विधि में छात्र सजीवता का अनुभव करते हैं।
(स) रंगमंच पर अभिनीत करने के कारण इस प्रयोग विधि को रंगमंच अभिनय प्रणाली भी कहते हैं।

(द) यह प्रविधि बहुत व्यय पूर्ण है।

3. व्याख्या विधि- इस विधि में अध्यापक समस्त नाटक का वाचन स्वयं करता है तथा साथ ही नाटक के लेखक, पात्र, प्रयोजन, घटनाएँ, कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र चित्रण, भाषा, शैली आदि का विवेचन भी करता है।
4. कक्षा अभिनय विधि- इस प्रणाली में प्रत्येक छात्र एक पात्र का संवाद याद कर लेता है और कक्षा में ही पात्रों के अनुसार वाचिक अभिनय

किया जाता है।

5. मिश्रित विधि- इस विधि में अध्यापक सबसे पहले स्वयं पात्रानुसार वाचन करता है और उसके पश्चात् छात्रों से पात्रानुसार वाचन कराया जाता है। यह आदर्श नाट्य प्रणाली और कक्षाभिनय प्रणाली का संयुक्त रूप है।
6. पात्रानुसार वाचन विधि।
7. यंत्र विधि।

अक्षरबोध कराने की विधियाँ

संश्लेषणात्मक विधि (सिथेटिक मैथड)

- इस विधि में अक्षर या वर्ण की पहचान पर बल दिया जाता है, शब्द या उसके अर्थ पर नहीं।
- इसे एल्फाबेटिक मैथड भी कहा जाता है।
- चित्र-वर्ण विधि इसी का सुधरा हुआ रूप है।

अक्षर बोध विधि या वर्ण विधि
(एल्फाबेटिक मैथड)

विश्लेषणात्मक विधि (एनेलिटिकल मैथड)

- इस विधि के अन्तर्गत पहले शब्द सिखाये जाते हैं और फिर शब्द का विश्लेषण करके वर्ण सिखाए जाते हैं।

(क) शब्द विधि (Word to Letter Method)

(ख) शब्द से पठन विधि (Word to Reading Method)

(ग) देखो और बोला (Look and Say Method)

(घ) वाक्य विधि (Sentence Method)

(ङ) कहानी विधि (Story Method)

(च) कविता विधि (Poem Method)

भाषा शिक्षण व नवीन शिक्षण पद्धतियाँ

→ प्रोजेक्ट पद्धति →

1. प्रोफेसर रिचर्ड्स ने प्रोजेक्ट शब्द का प्रयोग किया।
2. शिक्षण पद्धति के रूप में इसके विकास का श्रेय ड्यूवी और किलपैट्रिक को है।
3. प्रोजेक्ट पद्धति समस्या मूलक है।
4. छात्र जब किसी समस्या के हल में लगता है तो इसमें भाषा का भी व्यवहार करता है।

→ डाल्टन योजना →

1. कुमारी हेलन पार्कहर्स्ट (USA, डाल्टन नगर) इस योजना के जन्मदाता थे।
2. कक्षा पद्धति को नकारने वाली इस योजना में बच्चों को सारी शिक्षा प्रयोगशाला में ठेका पद्धति के माध्यम से दी जाती है।
3. छोटे बच्चों के लिए यह पद्धति उपयोगी नहीं है।

→ किंडरगार्टन पद्धति →

1. इस पद्धति के जन्मदाता फ्रोबेल (जर्मनी) माने जाते हैं।
2. किंडर का अर्थ पौधे, गार्टन का अर्थ बगीचा।
3. फ्रोबेल के अनुसार स्कूल एक बाग है, बच्चे पौधे हैं और अध्यापक माली है।
4. फ्रोबेल खेल द्वारा शिक्षा देने के पक्षधर है, जिसमें शिक्षा के 20 उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं।
5. ये भाषा शिक्षा भी खेल (गीत, अभिनय) द्वारा देने के पक्षधर है।

→ खेल पद्धति →

1. प्रवर्तक-कुक
2. भाषा शिक्षण में खेल विधि अत्यन्त सरल विधि है। पर्यटन, नाटक, गीत-गायन सम्बन्धी खेल भाषा शिक्षण में उपयोगी हैं। प्राथमिक स्तर तक ही उपयोगी है।

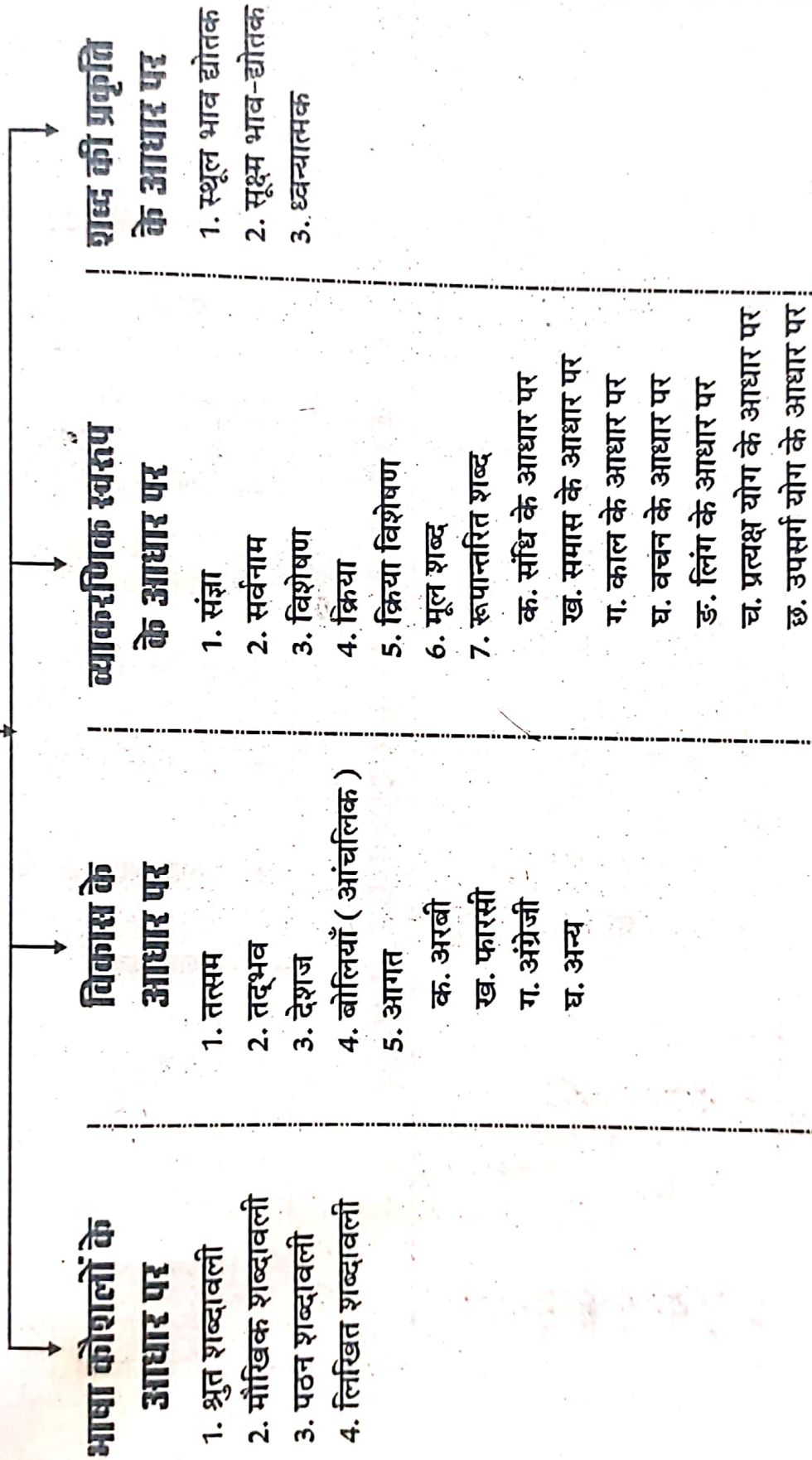
→ बेसिक पद्धति →

1. इस पद्धति के प्रवर्तक महात्मा गाँधी जी हैं।
2. उनके अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा छात्र को उसकी मातृभाषा में दी जाये।
3. इसमें शिल्प ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता है।

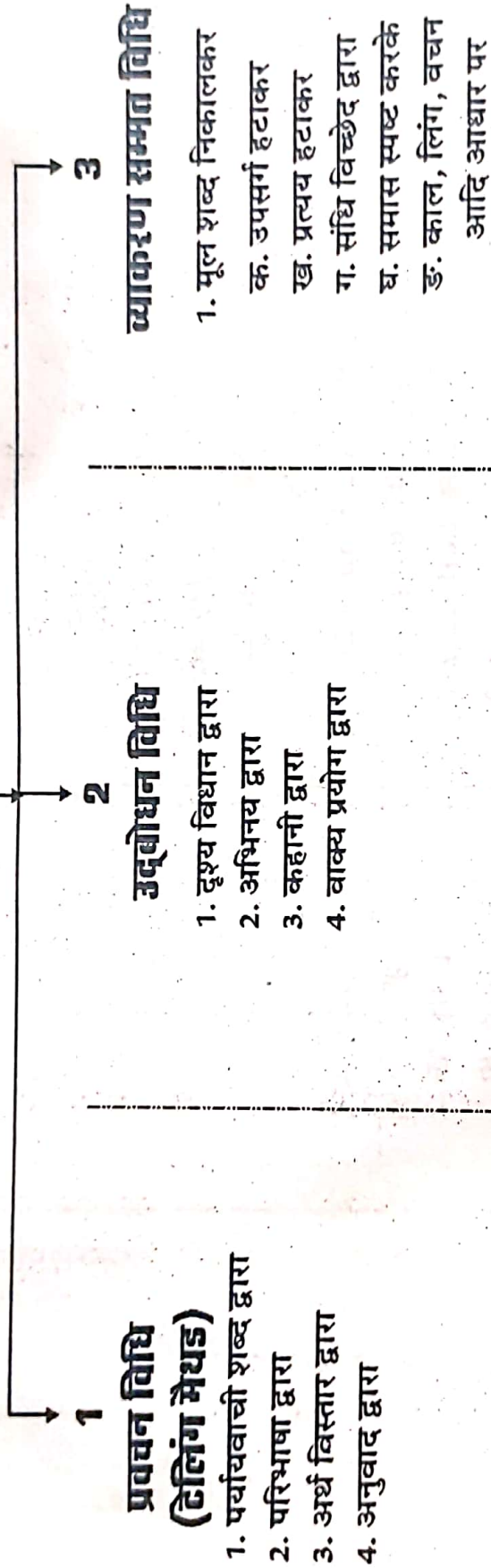
→ मॉटेसरी पद्धति →

1. मैडम मॉटेसरी (इटली) के अनुसार बालक को सर्वथा स्वतंत्र रखकर खेल द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. इस पद्धति में एक बाल भवन बनाया जाता है जिसमें शिक्षा के विभिन्न उपकरण से खेल-खेल में शिक्षा दी जाती है।
3. इनके अनुसार भाषा शिक्षण लिखने से प्रारम्भ होना चाहिए, पढ़ने से नहीं।

शब्दार्थ स्पष्ट करने के लिए शब्दावली का वर्गीकरण



शब्दार्थ स्पष्ट करने की विधियाँ



मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के साधन

- 1. अनौपचारिक बात-चीत
- 2. कहानी
- 3. घटना वर्णन
- 4. चित्र वर्णन
- 5. सस्वर वाचन
- 6. प्रश्नोत्तर
- 7. कविता पाठ
- 8. समालोचना
- 9. भाषण
- 10. आशु भाषण प्रतियोगिता
- 11. वाद-विवाद
- 12. चर्चा
- 13. नाटक
- 14. बाल सभा
- 15. विशेष सभाएँ
- 16. ध्वनियंत्रों पर बोलने का अभ्यास

कविता शिक्षण

माध्यमिक स्तर

- इस स्तर पर भाव तत्व तथा कला तत्वों का शास्त्रीय ज्ञान भी कराया जाना चाहिए।
- माध्यमिक कक्षाओं में साहित्यिक कविताओं का बाहुल्य होना चाहिए।

पूर्व माध्यमिक स्तर

- इस स्तर पर कविता के भाव तत्व की अनुभूति के साथ-साथ कला तत्व की अनुभूति भी करानी चाहिए।
- कक्षा 6 से कक्षा 8 तक उच्च कोटि की वर्णनात्मक कविताएं और सरल साहित्यिक कविताएँ पढ़ाई जाएँ।

प्राथमिक स्तर

- इस स्तर पर कविता के भाव तत्व की अनुभूति करानी चाहिए।
- प्राथमिक स्तर की दूसरी तथा तीसरी कक्षा में केवल बालगीत पढ़ाए जाने चाहिए और कक्षा 4 से वर्णनात्मक कविताएँ पढ़ाना शुरू करना चाहिए।

पाठ्य पुस्तक के अंग

प्रारम्भिक बिन्दु

शीर्षक
लेखक
प्रकाशक
भूमिका
पाठसूची

आन्तरिक पक्ष

चित्र
शब्द भण्डार
वाक्य संरचना
पाठ
अभ्यास प्रश्न
जीवन मूल्य
परिशिष्ट

बाह्यपक्ष

मुखपृष्ठ
जिल्द
कागज
टाइप का आकार
पुस्तक का आकार

सह-सम्बन्धी अंग

अध्यापक दर्शिका
अभ्यास पुस्तिका

कविता शिक्षण

→ समीक्षा प्रणाली →

- समीक्षा प्रणाली के अन्तर्गत कविता के भाव पक्ष तथा कला पक्ष की शास्त्रीय समीक्षा की जाती है।
- समीक्षा प्रणाली अधिकांशतः विश्वविद्यालयी स्तर पर अपनाई जाती है।

→ तुलनात्मक प्रणाली →

- इस प्रणाली के अनुसार कवि की एक रचना की तुलना अन्य कवियों की रचनाओं से की जाती है।
- इस प्रकार की तुलना उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त रहती है।
- विद्यार्थियों की चिन्तन मनन की प्रक्रिया को जगाने के लिए कविता के कुछ अंशों की व्याख्या इस विधि से की जानी चाहिए।

→ प्रश्नोत्तर या खंडान्वय प्रणाली →

- इस प्रणाली का मुख्य बल कविता में वर्णित विषय का बोध कराने पर है।
- इसमें भाव पक्ष पर कम तथा बुद्धि पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।

→ शब्दार्थ कथन प्रणाली →

- इसमें कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए कविता पढ़ी जाती है। प्रायः अध्यापक इसी प्रणाली का सहारा लेकर कविता पढ़ाते हैं।

→ गीत तथा नाट्य प्रणाली →

- नर्सरी तथा प्राथमिक स्तर पर गीत तथा नाट्य प्रणाली कविता शिक्षण के लिए उपयोगी रहती है।

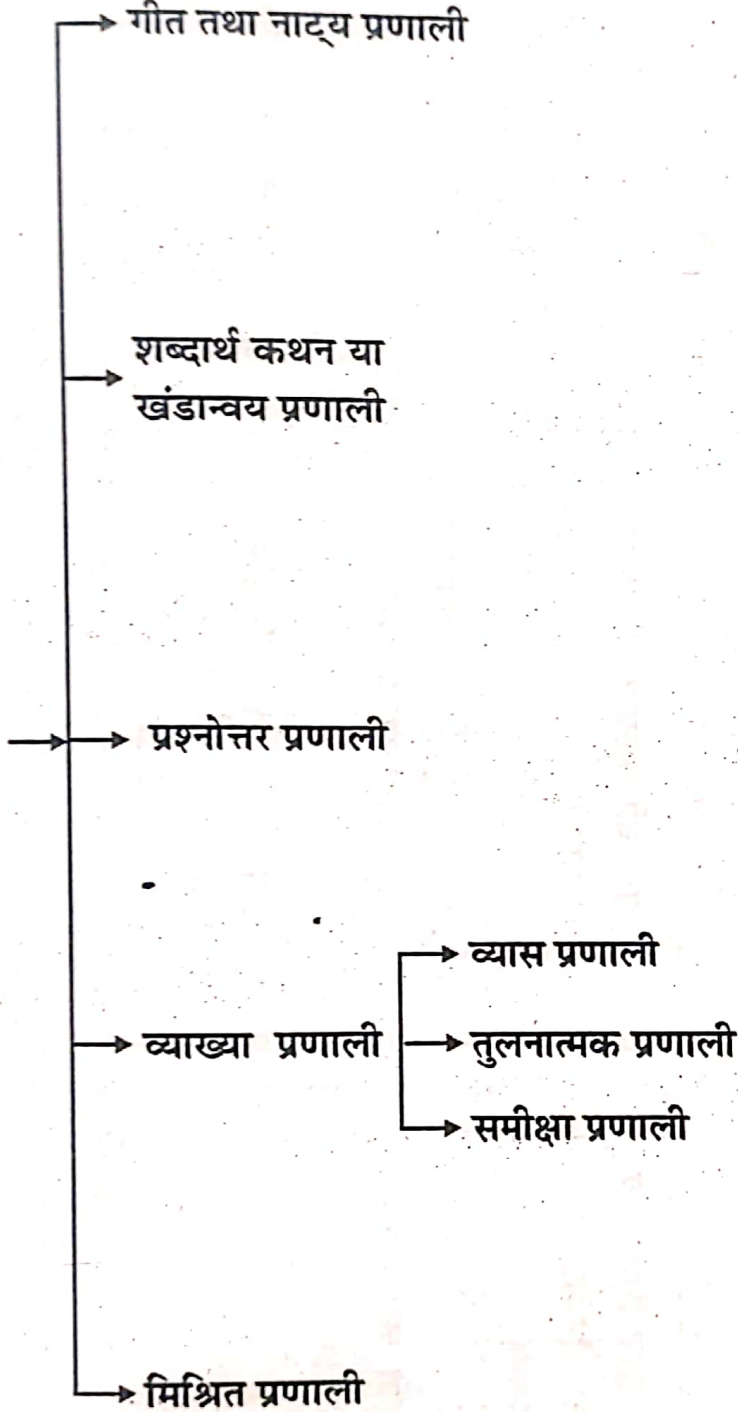
→ व्याख्या प्रणाली →

- व्याख्या प्रणाली से अभिप्राय है- कविता में आए कठिन शब्दों की समुचित व्याख्या, भावों की व्याख्या छंद और अलंकार विधान की समीक्षा आदि।
- व्याख्या प्रणाली माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के लिए बहुत उपयोगी है।

श्रेष्ठ कविता शिक्षण पद्धति

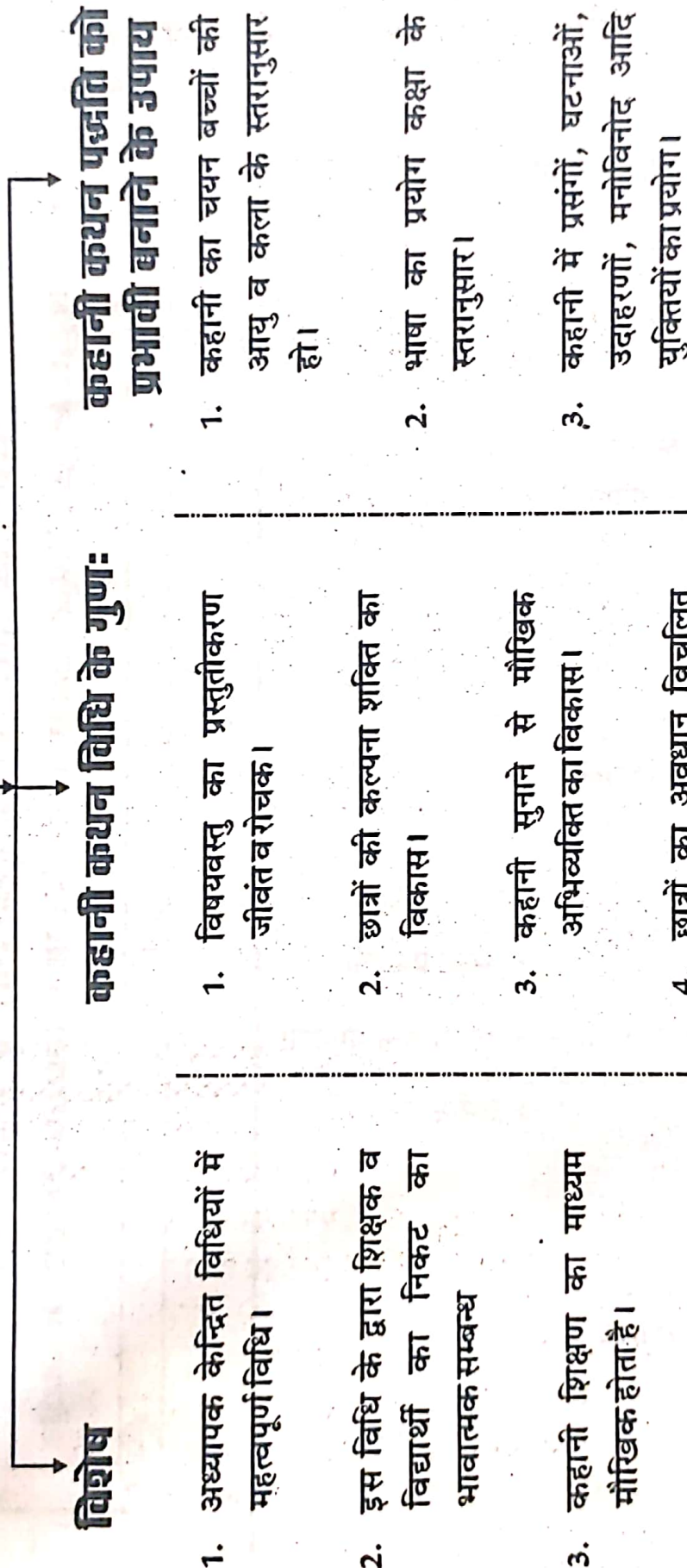
1. प्राथमिक स्तर - बालगीत प्रणाली
2. माध्यमिक स्तर - व्याख्या प्रणाली
3. उच्च कक्षाओं में - तुलनात्मक व समीक्षा प्रणाली

काव्य शिक्षण की प्रणालियाँ



योग्यता, आत्मविश्वास, साहस, सकारात्मक सोच, कठिन परिश्रम और लक्ष्य के प्रति समर्पण, सफलता का जूनून, सफलता का सबसे कारगर फार्मूला है, जिसके द्वारा दुनिया के करोड़ों लोग सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

कहानी कथन विधि



पंखों में अगर जान हो तो उड़ान तुमसे दूर नहीं,
दिल में अगर अटमान हो तो आसमान तुमसे दूर नहीं।
भक्ति के अंदाज अलग-अलग हो सकते हैं,
भक्ति में ग़र जान हो तो भगवान तुमसे दूर नहीं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

➤ अभिनय विधि से नाटक या एकांकी पढ़ाते समय अध्यापक को ध्यान रखना चाहिए-

- (1) कठिन स्थलों की व्याख्या छात्रों के सहयोग से करना।
- (2) उचित वातावरण निर्माण का छात्रों की रुचि एवं उत्सुकता बढ़ाना
- (3) अध्यापक को नाट्य कला का ज्ञान एवं नाटक में रुचि होनी चाहिए
- (4) उपरोक्त सभी (4)

➤ नाटक शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है-

- (1) अभिक्रमिit अध्ययन विधि (2) व्याख्यान विधि
- (3) अभिनय विधि (4) प्रश्नोत्तर विधि (3)

व्याख्या- भाषायी कौशलों के विकास में नाटक शिक्षण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नाटक शिक्षण को सरस, रोचक तथा प्रभावी बनाने के लिए अध्यापक कक्षाभिनय विधि अपनाता है। यह मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यपूर्ण प्रणाली है। छात्रों के सक्रिय रहने से इस प्रणाली में कक्षा में पर्याप्त जीवंतता बनी रहती है, बालकों की साहित्य में रुचि बढ़ती है और सृजनात्मकता का विकास होता है। अर्थात् नाटक शिक्षण के इन्हीं सब उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अभिनय विधि सर्वोत्तम विधि है।

➤ वे प्रश्न जिनके उत्तर हेतु हाँ/नहीं में से एक का चयन करना हो उन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है: (RPSC Sanskrit-III Grade Gen. -2008)

- (1) वस्तुनिष्ठ प्रकार
- (2) अति लघुउत्तरात्मक प्रकार
- (3) लघुउत्तरात्मक प्रकार
- (4) वैध प्रकार (1)

➤ गद्य शिक्षण की उपयुक्त विधि है-

- (1) हर्बर्ट की पंचपदी (2) प्रश्नोत्तर विधि
- (3) तुलना विधि (4) समीक्षा विधि (1)

➤ विद्यार्थी पाठ या उसके किसी भाग को अच्छी प्रकार समझ रहे हैं या नहीं, इसके लिए उपयुक्त है-

- (1) गृह कार्य (2) बोध प्रश्न
- (3) मौन वाचन (4) व्याख्या (2)

REET- शिक्षण विधियाँ

व्याकरण शिक्षण

➤ व्याकरण- व्याकरण शब्द वि+आ+कृ धातु+ल्युट प्रत्यय के योग से बना है जिसका अर्थ है- व्याक्रियेन्ते शब्दायेन अर्थात् जिनके द्वारा अर्थ स्वरूप से शब्दों की सिद्धि होना होता है।

➤ डॉ. स्वीट- "व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण है।"

➤ व्याकरण भाषा का मेरुदंड है।

➤ पतंजलि ने 'महाभाष्य' में व्याकरण को शब्दानुशासन कहा है।

➤ भाषा शिक्षण में व्याकरण का निम्न स्वरूप होना चाहिए-

1. व्याकरण का ज्ञान प्रारंभिक कक्षाओं में प्रयोग द्वारा ही कराया जाना चाहिए।
2. निम्न माध्यमिक कक्षाओं में बच्चों को परिभाषा का ज्ञान उदाहरणों के बाद समझाना आवश्यक है।
3. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में सामान्य नियम और उनकी आलोचना आवश्यक है।
4. व्याकरण शिक्षण का आरंभ वाक्य द्वारा होना चाहिए क्योंकि बालक पूर्ण वाक्य ही बोलता है। वाक्य ही अर्थ को शक्ति देता है।

व्याकरण शिक्षण की प्रणालियाँ

1. आगमन प्रणाली (प्रयोग प्रणाली) -

(अ) यह व्याकरण शिक्षण की सर्वोत्तम प्रणाली मानी जाती है।

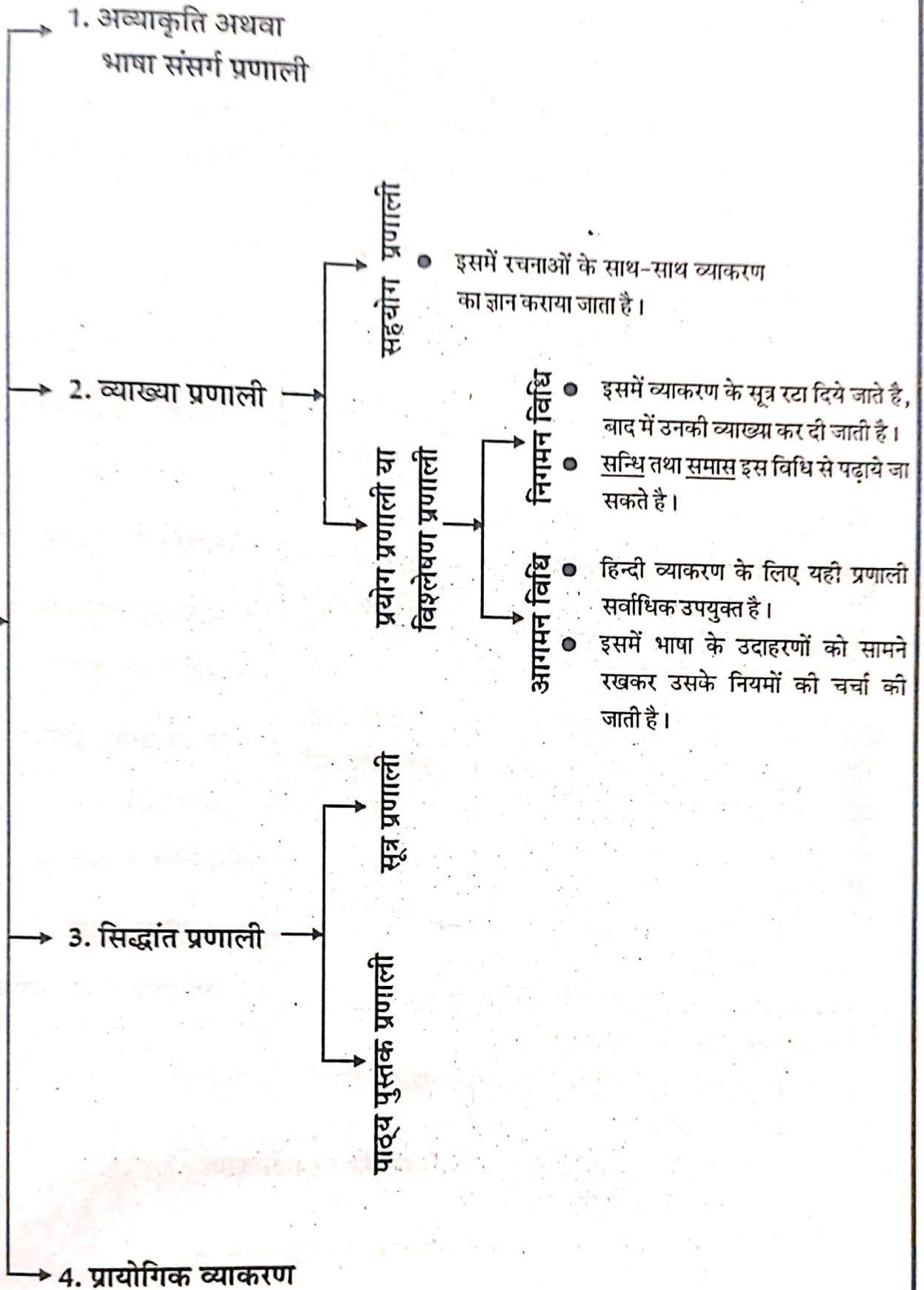
(ब) इस विधि में व्याकरण के नियमों को प्रत्यक्ष न बताकर उदाहरणों द्वारा बालक से निकलवाए जाते हैं।

(स) आगमन प्रणाली के सोपान -

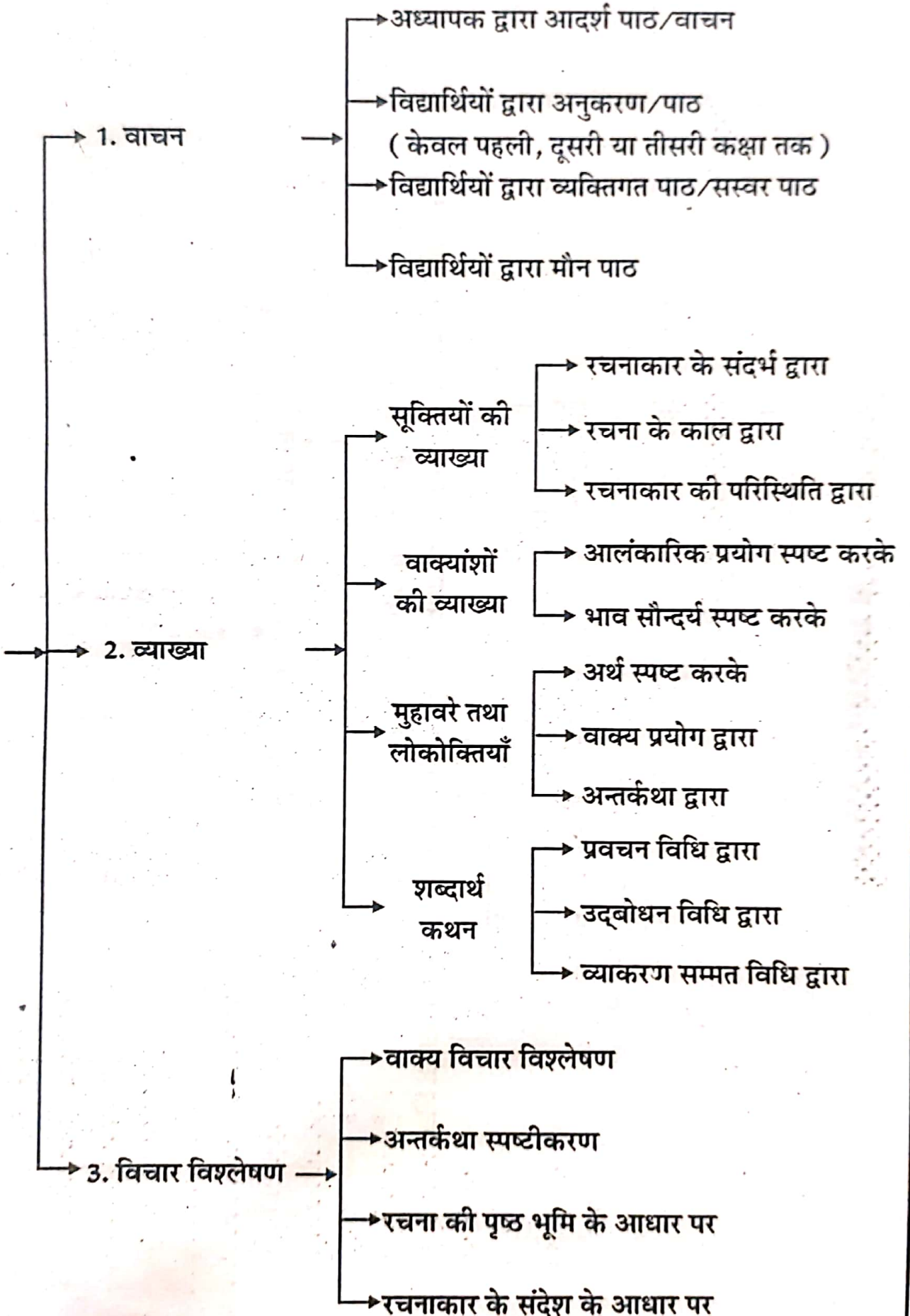
- (i) उदाहरण प्रस्तुत करना
- (ii) तुलना, निरीक्षण या विश्लेषण करना
- (iii) निष्कर्ष निकालना

- (iv) प्रयोग एवं अभ्यास की पुष्टि करना
 (द) यह विधि विशेष से सामान्य की ओर सूत्र पर आधारित है।
 (य) यह विधि पूर्णतः मनोवैज्ञानिक विधि मानी जाती है।
 (र) इसे विश्लेषण विधि भी कहते हैं।
 (ल) यह प्रभावपूर्ण प्रणाली है। इसके अंतर्गत भाषायी तत्त्वों- शब्द, अर्थ, वाक्य वर्तनों आदि का बोध कराया जाता है।
 (व) इसके अंतर्गत किसी नियम या पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता नहीं होती। गद्य शिक्षण कराते समय ही व्याकरण के नियम बताये जाते हैं।
 उदाहरण- भारत मेरा देश है।
 इस वाक्य में भारत, देश आदि शब्दों द्वारा संज्ञा को परिभाषित किया जाता है।
2. सूत्र प्रणाली (निगमन प्रणाली)-
 (अ) इस परम्परागत प्रणाली में व्याकरण के नियमों को सूत्रबद्ध कर छात्रों को रटाये जाते हैं।
 (ब) इस विधि में छात्रों को व्याकरण संबंधी नियम पहले बता दिये जाते हैं। तत्पश्चात् उदाहरणों द्वारा उसी नियम का प्रयोग करना सिखाया जाता है।
 उदाहरणार्थ- यदि हमें छात्रों को सर्वनाम का ज्ञान देना है तो पहले छात्रों को सर्वनाम की परिभाषा बतायेंगे। उसके बाद वाक्य लिखकर या बोलकर छात्रों से उसमें से सर्वनाम शब्दों को छँटवायेंगे।
3. पाठ्य पुस्तक (निगमन) प्रणाली -
 (अ) सूत्र प्रणाली (निगमन) का ही दूसरा रूप पाठ्य-पुस्तक प्रणाली है।
 (ब) सूत्र प्रणाली जहाँ संस्कृत से आयी है, वहीं पाठ्य पुस्तक प्रणाली अंग्रेजी से।
 (स) इस पद्धति में व्याकरण शिक्षण का आधार एक पुस्तक होती है। जिसमें व्याकरण संबंधी सामान्य, संक्षिप्त चर्चा दी हुई होती है।
 (द) यह एक अमनोवैज्ञानिक विधि पर आधारित प्रणाली है जो व्याकरण के अध्यापन को नीरस तथा अनाकर्षक बना देती है।
4. विश्लेषणात्मक (आगमन-निगमन) प्रणाली-
 इस पद्धति में पहले नियम बताये जाते हैं फिर उन्हें उदाहरण प्रयोग खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
5. भाषा संसर्ग (आगमन) प्रणाली -
 (अ) इस प्रणाली में व्याकरण शिक्षा के सैद्धांतिक पक्ष पर विशेष बल न दिया जाकर उसके व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया जाता है।
 (ब) इस प्रणाली में ख्याति प्राप्त लेखकों की रचनाएँ पहले छात्रों को दे दी जाती हैं। छात्र स्वयं निर्णय करते हैं कि भाषा का सही रूप कौनसा है।
 (स) यह मनोवैज्ञानिक प्रणाली है परंतु सर्वथा अपूर्ण है।
 (द) इस विधि में छात्र भाषा के शुद्ध/अशुद्ध रूप का सही निर्णय नहीं ले पाते।
6. समवाय शिक्षा प्रणाली -
 (अ) इस प्रणाली के अनुसार व्याकरण की शिक्षा पृथक् से देने की आवश्यकता नहीं बल्कि रचना शिक्षण व गद्य शिक्षण के साथ-साथ व्याकरण शिक्षा स्पष्ट कर दी जाती है।
 (ब) व्याकरण के नियमों का पालन प्रसंग के अनुसार प्रयोग करना सीखाया जाता है।
 दोष- इस विधि से व्याकरण की शिक्षा देने पर शिक्षण का कोई तार्किक क्रम नहीं रहता।
 उपर्युक्त व्याकरण शिक्षण विधियों की समीक्षा:-
 (1) आगमन व भाषा संसर्ग विधि द्वारा मिलाजुला शिक्षण अधिक फ़ायदेमंद हो सकता है।
 (2) प्राथमिक स्तर पर पाठ्य पुस्तक के पाठों को आधार बनाकर व्याकरण शिक्षण दिया जाना चाहिए।
 (3) उच्च स्तर पर भाषा-संसर्ग विधि उपयुक्त है।
 (4) व्याकरण एक विज्ञान है, उसकी शिक्षा वैज्ञानिक ढंग से दी जानी चाहिए।
 (5) अभ्यास के लिए भाषा संसर्ग तथा समवाय विधि का सहारा लिया जा सकता है।

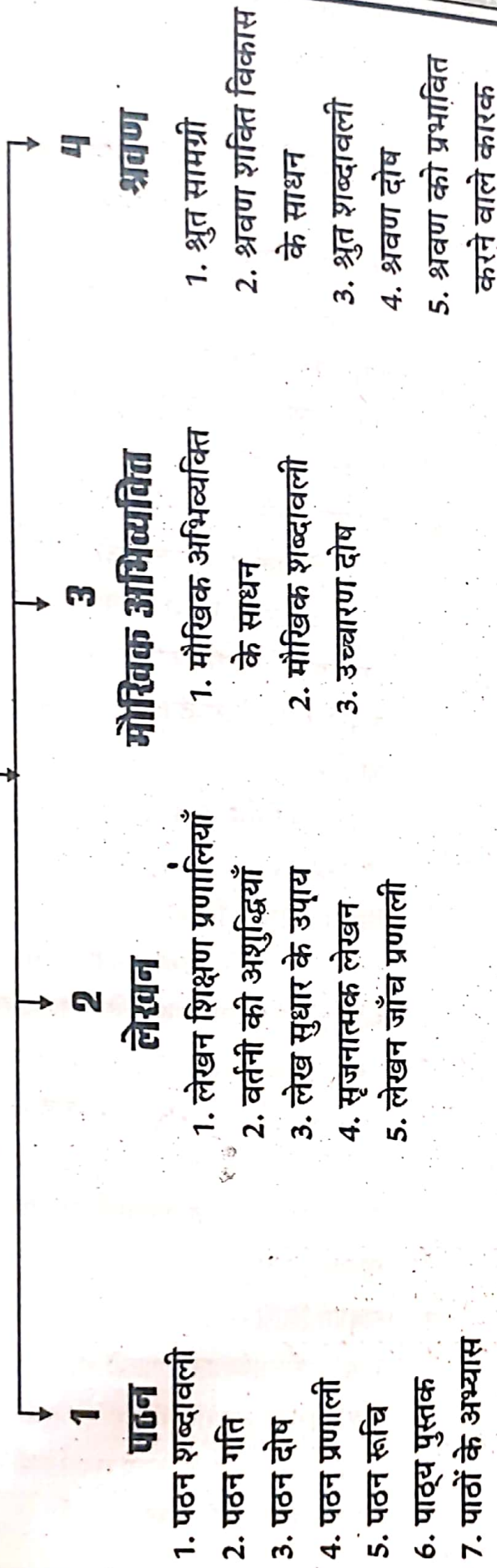
व्याकरण शिक्षण की प्रणालियाँ



पत्र लेखन सिखाने की विधियाँ



क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र



रचना शिक्षण

रचना शब्द का अर्थ है- बनाना, सजाना और क्रमबद्ध करके प्रस्तुत करना। बालक जब बोलना-लिखना सीख जाता है, तो वह अपने भावों और विचारों को दूसरों के लिए सार्थक एवं प्रभावी ढंग से मौखिक या लिखित रूप से प्रकट करता है।

रचना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यह शब्दों को क्रम से सुव्यवस्थित करने की कला है।

यह कलात्मक अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में की जाती है, इसे लिखित रचना कहा जाता है।

रचना शिक्षण के उद्देश्य-

1. बालकों में विचारों, अनुभवों आदि की लिखित अभिव्यक्ति उत्पन्न करना।
2. बालकों में तर्क, कल्पना आदि का विकास करना।
3. बालक में विचारों को क्रमबद्ध रूप से सोचने, बोलने और लिखने की क्षमता उत्पन्न करना।

रचना शिक्षण की विधियाँ-

1. प्रश्नोत्तर विधि-

(अ) इस विधि के अंतर्गत शिक्षक किसी विषय पर बालकों से प्रश्न करता है और बालक उनका उत्तर देते हैं।

(ब) यह विधि प्रारंभिक कक्षाओं में उपयुक्त है।

2. उद्बोधन विधि-

(अ) यह प्रश्नोत्तर विधि का ही विकसित रूप है।

(ब) इसका उद्देश्य पाठ से संबंधित क्रमबद्ध और व्यवस्थित विचार उत्पन्न करना है।

(स) इस विधि का उपयोग ऐतिहासिक, भौगोलिक आदि विषयों के लिए किया जाता है।

3. चित्र वर्णन विधि-

(अ) इसके अंतर्गत शिक्षक किसी चित्र को कक्षा

में प्रस्तुत कर उससे संबंधित प्रश्न पूछता है।

(ब) यह रुचिपूर्ण विधि है जिसमें बालक पूर्ण मनोयोग से मौखिक व लिखित रचना करता है।

4. रूपरेखा विधि-

(अ) इस विधि में शिक्षक द्वारा विषय का सारांश या उसकी रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है।

(ब) इसमें बालक स्वतंत्र वाक्य रचना करता है।

(स) यह प्रभावशाली विधि है जिसके द्वारा बालक की स्मरण शक्ति, कल्पना शक्ति और तर्क शक्ति का विकास होता है।

5. प्रवचन विधि-

(अ) शिक्षक द्वारा विषय को पूर्ण रूप से बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

(ब) इसके अंतर्गत बालक को उपरोक्त विषय में अपनी भाषा में स्वतंत्र रूप से रचना की छूट दी जाती है।

(स) यह विधि उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त है।

6. विषय प्रबोधन विधि-

(अ) यह विधि उच्च कक्षाओं में नाटक और कविता की रचना शिक्षण के लिए उपयुक्त है।

(ब) इसके अंतर्गत शिक्षक विषय से संबंधित सभी पहलुओं को प्रस्तुत करता है तथा समझाता है।

(स) बालक प्रस्तुत पहलुओं पर स्वयं के विवेक, कल्पना, तर्क के आधार पर रचना करता है।

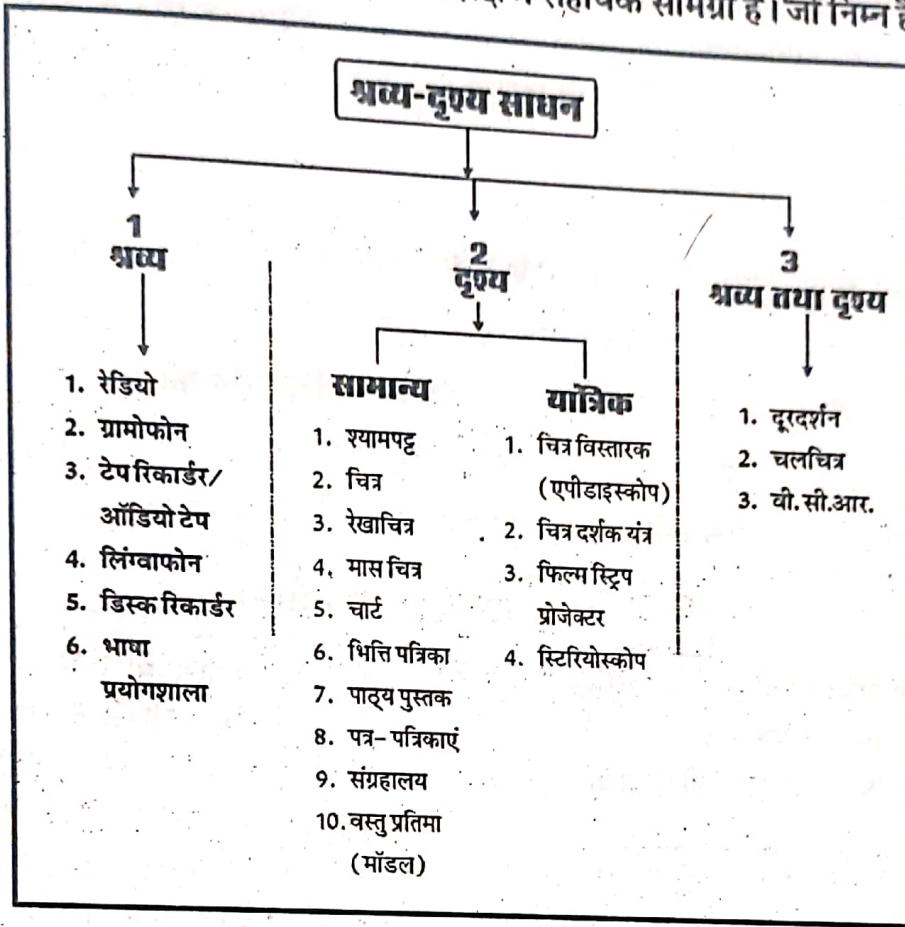
7. मंत्रणा विधि-

(अ) इसे अध्ययन प्रणाली भी कहा जाता है।

(ब) इसके अंतर्गत विषय से संबंधित पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं तथा अन्य संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन बालक द्वारा स्वयं किया जाता है।

भाषा शिक्षण के उपागम

भाषा शिक्षण में उपागम का अर्थ :- शिक्षण सहायक सामग्री है। जो निम्न है-



भाषा दक्षता का विकास

भाषा सीखने का आधार :- बालक की जिज्ञासा और अनुकरण की स्वाभाविक वृत्तियाँ इसका आधार हैं।

भाषा सीखने की प्रक्रिया :-

- दृश्यबिम्ब- देखने से बालक के मस्तिष्क में प्रत्येक वस्तु, वातावरण या दृश्य के बिम्ब बनते हैं।
- श्रुतिबिम्ब- सुनने से जो श्रुतिबिम्ब उसके मस्तिष्क में बनते हैं वे दृष्टिबिम्ब के साथ जुड़ जाते हैं और इस तरह बालक एक वस्तु को उसके नाम के साथ पहचानना प्रारंभ कर देता है।
- विचारबिम्ब- दृश्यबिम्ब और श्रुतिबिम्ब से मिलकर बना हुआ प्रत्यय इतना मजबूत हो जाता है कि वस्तु की अनुपस्थिति में विचारबिम्ब बनने लगता है।
विचारबिम्ब मानसिक क्रिया है।
- भावबिम्ब- बालक के हृदय में भाव उत्पन्न होते हैं। वह सुख-दुख का अनुभव करने लगता है।

भाषायी कौशलों का विकास

- ☛ बच्चा सुनकर, बोलकर, पढ़कर और लिखकर विचारों का आदान-प्रदान करता है। अतः इन योग्यताओं को विकसित करना ही भाषा-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। इन्हें ही भाषा-शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्य कहा जाता है। ये कौशलात्मक उद्देश्य ही भाषायी कौशल कहे जाते हैं।

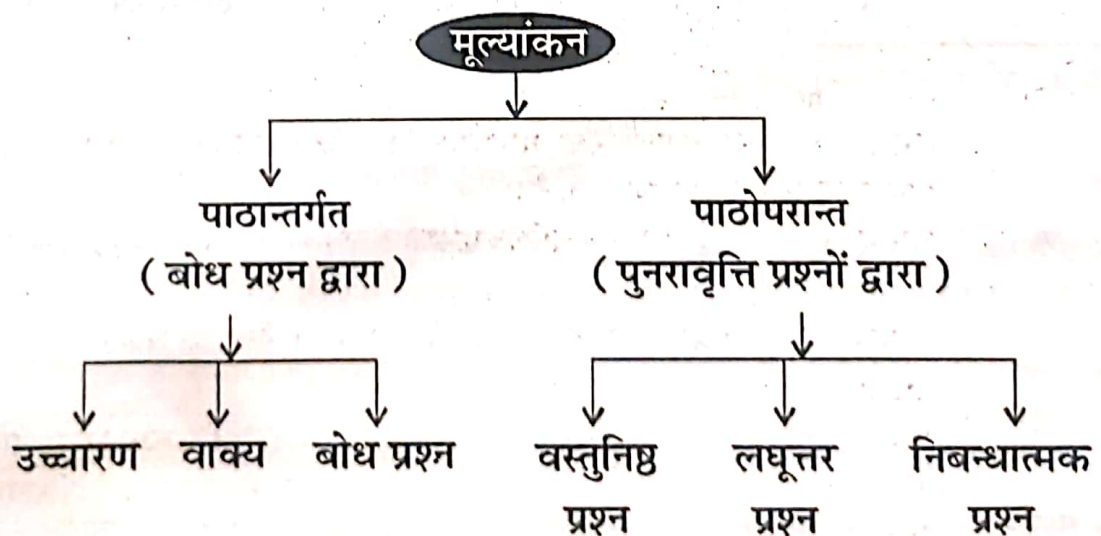
भाषायी कौशल:-

- (1) सुनकर अर्थ ग्रहण करना यानी श्रवण कौशल
- (2) पढ़कर अर्थ ग्रहण करना यानी पठन कौशल
- (3) बोलकर विचार व्यक्त करना यानी मौखिक अभिव्यक्ति कौशल
- (4) लिखकर विचार व्यक्त करना यानी लेखन कौशल

- ☛ प्रथम दो कौशल ग्राह्यात्मक कौशल और अगले दो कौशल अभिव्यंजनात्मक कौशल कहे जाते हैं।

हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ

1. हिन्दी के प्रति भावात्मक अभिवृत्ति का निर्माण	2. शिक्षण विधि सम्बन्धी चुनौतियाँ
3. उच्चारण सम्बन्धी सूचनाएँ	4. लिपि-सम्बन्धी समस्या
5. वर्तनी-सम्बन्धी अशुद्धि की समस्या	6. व्याकरणिक समस्याएँ
7. पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ	8. पाठ्य-पुस्तकों की समस्या
9. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी अध्यापक	10. रुचिशील पाठ्यक्रम न होना
11. स्थानीय विशेषताओं का समावेश न होना	12. हिन्दी कठिनता का भ्रम
13. हिन्दी के प्रति उपेक्षा का भाव	14. हिन्दी शिक्षक की अकुशलता



उपलब्धि परीक्षण

- छात्रों की विभिन्न विषयों में ज्ञान अथवा अधिगम की प्राप्ति की सीमा ज्ञात करने का परीक्षण उपलब्धि परीक्षण कहलाता है।

उपलब्धि परीक्षण के निर्माण के पांच चरण :-

- 1. शैक्षणिक उद्देश्य निश्चित करना।
- 2. अभिकल्प निर्धारण - परीक्षण के नीतिगत निर्णय अर्थात् शिक्षण उद्देश्य, प्रश्न प्रकार, पाठ्यक्रम, ईकाई, उपईकाई, कठिनाई के स्तर के आधार पर भारांक निश्चित करना।
- 3. रूपरेखा तैयार करना - प्रश्नपत्र का ब्लूप्रिंट / नील पत्र तैयार करना।
- 4. प्रश्न लेखन करना।
- 5. समंजन अर्थात् जांच कार्य करना।

उपलब्धि परीक्षण के प्रकार :-

1. प्रमापीकृत परीक्षण/मानक परीक्षण
2. अनौपचारिक या अध्यापक कृत परीक्षाएं/अप्रमापीकृत परीक्षण

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन शब्द हैं- सतत्, व्यापक एवं मूल्यांकन।

1. सतत् (Continuous)-

इसमें बच्चे का आकलन सतत् एवं नियमित रूप से किया जाता है जो पूरे वर्ष औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से चलता रहता है। इसमें न सिर्फ विषय आधारित बल्कि सहशैक्षिक क्रियाकलापों का भी सतत् आकलन किया जाता है।

2. व्यापक (Comprehensive)-

व्यापकता से आशय बच्चे के समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास से है जो एक अच्छे नागरिक के लिए आवश्यक होता है।

इन गुणों का विकास धीमी गति से होता है तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है।

व्यापक आकलन, अवलोकन, चर्चा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

3. मूल्यांकन (Evaluation)-

मूल्यांकन, कक्षा अधिगम प्रक्रिया के साथ-साथ बच्चों के सीखने की गति, अवधारणा, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल, व्यवहार, अनुभव आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध रूप से साक्ष्यों का संकलन, विश्लेषण, व्याख्या एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है।

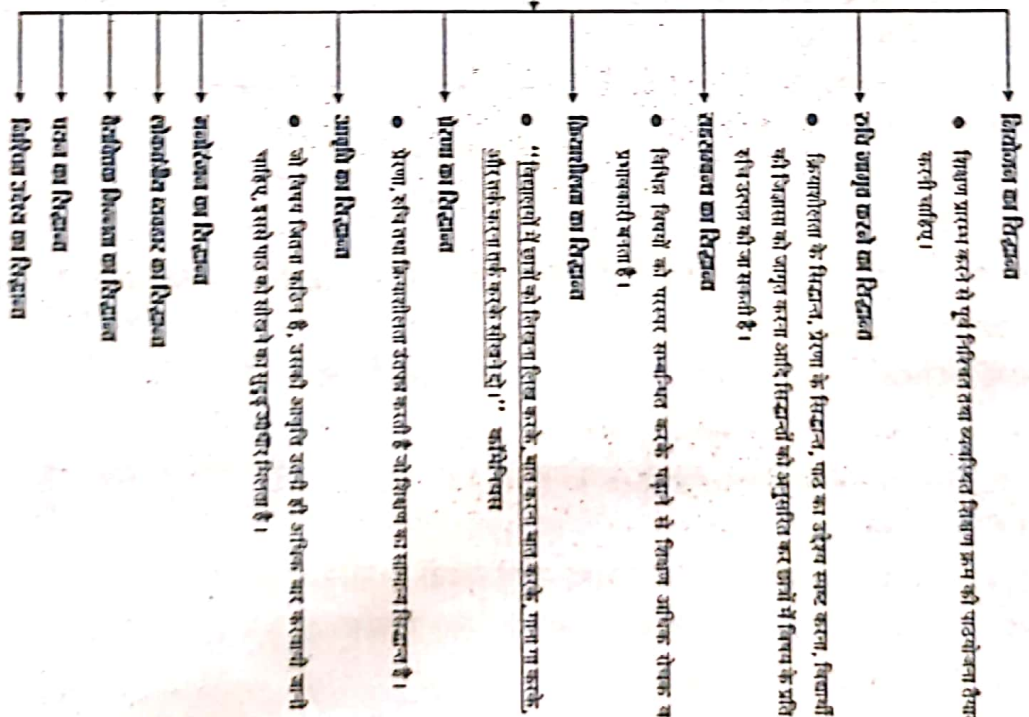
उपचारात्मक शिक्षण

- “कमजोर शिक्षार्थियों के शिक्षण अधिगम के दोषपूर्ण प्रभावों को दूर करने की प्रक्रिया उपचारात्मक शिक्षण कहलाती है, ऐसा शिक्षण दोषों के निदान पर आधारित होता है और शिक्षार्थी की कमजोरियों को दूर करता है।
- मातृभाषा के उपचारात्मक शिक्षण में भी छात्र की कठिनाइयों एवं उसके कारणों का पता लगाकर (नैदानिक परीक्षण की सहायता से) उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।
- वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप ‘बालकेन्द्रित’ होने के कारण अब इसका महत्व अत्यन्त बढ़ गया है।
- शैक्षिक उपचार के द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि बालक को जो विषय-वस्तु या उससे सम्बन्धित कठिनाइयाँ उसके अधिगम में बाधा पहुँचा रही हैं, उन्हें सुलझा दिया जाये।

उपचारात्मक शिक्षण के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली प्रमुख विधियाँ :-

- 1. व्यक्तिगत अभ्यास
- 2. सामूहिक उपचार/निराकरण
- 3. व्यक्तिगत रूप से छात्रों की गलतियों का निराकरण
- 4. व्यक्तिगत भेदों के आधार पर निराकरण
- 5. उपचार गृह

शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त



क्या है?

- शिक्षण सूत्र इस मार्ग की सुगम उक्तियाँ हैं, जिनसे शिक्षण और सीखना आगे बढ़ते हैं।
- हरबर्ट स्पेन्सर तथा कॉमेनियस ने अपने-अपने अनुभवों तथा निर्णयों को सूत्र रूप में प्रकट किया है।

7. पूर्ण से अंश की ओर

छात्रों के सामने पहले किसी विषय का पूर्ण रूप प्रस्तुत करना चाहिए उसके बाद उसके अंशों को पढ़ाया जाना चाहिए।
उदाहरण-हिन्दी में कथा शिक्षण करते समय पहले सम्पूर्ण कहानी को छात्रों के समक्ष संक्षेप में प्रस्तुत कर उसको अंशों में आगे बढ़ाने से छात्रों का ध्यान पाठ की ओर अधिक केन्द्रित होगा।

6. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर

- जिन वस्तुओं और घटनाओं को छात्र प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, उसके बारे में जानकारी प्राप्त करना छात्रों के लिए सरल हो जाता है।
उदाहरण-इतिहास शिक्षण में राजस्थान के ऐतिहासिक स्थलों का पाठ पढ़ाने से पूर्व शैक्षिक भ्रमण द्वारा कतिपय स्थलों को सुविधानुसार दिखाया जा सकता है।

5. स्थूल से सूक्ष्म की ओर

- पहले छात्रों को मूर्त चिन्तन पर आधारित ज्ञान दिया जाये उसके बाद काल्पनिक चिन्तन पर आधारित ज्ञान।
उदाहरण-पहले गाय पर निबंध लिखने के लिए छात्रों के समक्ष गाय का चित्र प्रस्तुत करके उसकी बाह्य आकृति के बारे में लिखने को कहना चाहिए उसके बाद सूक्ष्म ज्ञान की ओर बढ़ते हुए उसकी उपयोगिता पर लिखने को कहना चाहिए।

4. विशिष्ट से सामान्य की ओर

- इस शिक्षण सूत्र में आगमन विधि का प्रयोग करते हुए अर्थात् विशिष्ट उदाहरणों का प्रयोग कर छात्रों से ही सामान्यीकरण के द्वारा नियम निकलवाया जाता है।
उदाहरण-‘द्विगु समास’ पढ़ाने के लिए इससे सम्बंधित सामासिक पदों को छात्रों के समक्ष उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करके उनका विग्रह करवाया जाता है, फिर छात्रों के समक्ष नियम प्रस्तुत किया जाता है।

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर

- पूर्व ज्ञान को आधार बनाकर नवीन ज्ञान देना
उदाहरण-
‘संतुलित आहार’ विषय को पढ़ाने से पूर्व दिन-प्रतिदिन खाई जाने वाली वस्तुओं के बारे में जानकारी देना।

2. सरल से कठिन की ओर

- पहले सरल विषय तथा बाद में कठिन विषयों की ओर बढ़ा जाये।
उदाहरण-हिन्दी में संधि पढ़ाने समय ‘संधि’ को पहले तथा उसके प्रकार तथा भेदों को बाद में पढ़ाया जाये।

3. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

- विविध पक्षों में विषय का विश्लेषण (अलग-अलग बाँटना) कर पुनः विषय का संश्लेषण (पुनः जोड़ना) करना।
उदाहरण-भूगोल पढ़ाने समय भारत का मानचित्र प्रस्तुत करना, अलग-अलग प्रान्तों की संस्कृति, भौगोलिक स्थिति, जलवायु आदि से परिचित करवाना, पुनः विविध प्रान्तों की विविधता में जो एकरूपता है, उसे बताते हुए सम्पूर्ण भारत की ओर पुनः लौटना।

शिक्षण
सूत्र

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

➤ बालक के सर्वांगीण विकास की जाँच किस विधि द्वारा होती है-

- (1) परीक्षण (2) मूल्यांकन
(3) मापन (4) तीनों द्वारा (2)

व्याख्या- बालक के सर्वांगीण विकास की जाँच मूल्यांकन के माध्यम से संभव है। मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षण विधियों, शिक्षण उद्देश्यों और पाठ्यक्रम के औचित्य का पता लगाना, निदानात्मक प्रक्रिया (बालक की कमियों का पता लगाना) अपनाना एवं कमियों को दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण देना भी आता है।

➤ निम्नलिखित में से कौनसा भाषा शिक्षण का उद्देश्य है (RPSC Sans.-III Grade 2008)।

- (1) अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ाना
(2) शब्द संपदा का विकास
(3) व्याकरण सम्मत वाक्य रचना का ज्ञान
(4) साहित्य रचना की क्षमता प्राप्त करना (4)

➤ आस्था, श्रद्धा, प्रेम, सहृदयता और संवेदनशीलता के गुण शिक्षण के किस उद्देश्य के अंतर्गत आते हैं-

- (1) रचना कार्यों में भौतिकता लाना
(2) सद्वृत्तियों का विकास करना
(3) भाषा तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना
(4) साहित्य का रसास्वादन करना (2)

व्याख्या- सद्वृत्तियों से संबंधित गुण यथा- श्रद्धा, प्रेम, सहृदयता, संवेदनशीलता आदि शिक्षण के अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्य के अंतर्गत आते हैं। इससे बच्चों में सद्वृत्तियों का विकास होता है। उनमें संस्कृति और सौंदर्य के प्रति आस्था जागृत होती है तथा भाषा एवं साहित्य संबंधित अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित होती है। (स्त्रोत- राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिक्षक शिक्षण विभाग, उदयपुर)

➤ नाटक शिक्षण का उद्देश्य नहीं है-

- (1) बालकों को रंगमंचीय नायक बनाना
(2) बालकों को भावानुकूल वाचन की शिक्षा देना
(3) संवाद एवं अभिनय कला से छात्रों को अवगत करना
(4) समायोजित व्यवहार और नैतिक शिक्षा देना (1)

व्याख्या- नाटक शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य छात्रों को अभिनय द्वारा शुद्ध उच्चारण, प्रभावपूर्ण भाव प्रकाशन, भावानुकूल बोलने, समायोजित व्यवहार एवं नैतिकता की शिक्षा देना है। सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय जीवन मूल्यों को मानव हृदय में स्थापित करने का नाटक सर्वोत्तम माध्यम है।

➤ उत्प्रेरक प्रेरक से अभिप्राय है-

- (1) पुनरावृत्ति (2) प्रस्तुतीकरण
(3) प्रस्तावना (4) उद्देश्य एवं अपेक्षित परिवर्तन (3)

व्याख्या- उत्प्रेरक उपक्रम का संबंध प्रस्तावना से है। प्रस्तावना हर्बर्ट की पंचपदी पाठ योजना का प्रथम पद है जिसमें अध्यापक छात्रों से पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रेरणात्मक प्रश्नों द्वारा या रोचक कथन, प्रसंग वर्णन द्वारा छात्रों में प्रस्तुत विषय के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करता है। (स्त्रोत- राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिक्षक शिक्षण विभाग, उदयपुर)

➤ कहानी पाठ के संभाव्य पाठ का रूप है-

- (1) संवादात्मक पाठ
(2) गहन अध्ययननिष्ठ पाठ
(3) मौखिक कहानी और रचना पाठ
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या- कहानी पाठ के संभाव्य पाठ रूप- मौखिक कहानी पाठ, रचना पाठ, गहन अध्ययननिष्ठ पाठ तथा संवादात्मक पाठ।

➤ रचना में शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है-

- (1) सुव्यवस्थित रूप में
(2) अभिव्यक्ति के रूप में
(3) भावात्मक रूप में
(4) अभिव्यंजनात्मक रूप में (2)

➤ व्याकरण के ज्ञान से भाषा के प्रयोग में आती है-

- (1) कुशलता (2) अकुशलता

(3) व्यावहारिकता (4) व्याकरणिता (1)

➤ छात्र द्वारा अपने लिखित कार्य को शुद्ध किये जाने पर -

- (1) अध्यापक के श्रम और समय की बचत होती है
- (2) विद्यालय का स्तर ऊँचा होता है
- (3) छात्रों में अनुशासन की भावना प्रबल होती है
- (4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या- छात्र द्वारा अपने लिखित कार्य को शुद्ध किये जाने पर शिक्षक के श्रम की बचत होती है। बालक को अपनी गलती समझने एवं उसे शुद्ध करने का अवसर मिल जाता है किंतु इसमें कभी-कभी बालक द्वारा अपनी गलती को छिपाने का डर भी बना रहता है।

➤ व्याकरण शिक्षण की सरल व सुग्राह्य विधि है-

- (1) निगमन विधि (2) पाठ्यपुस्तक विधि
- (3) आगमन विधि (4) प्रयोग विधि (3)

व्याख्या- व्याकरण शिक्षण की सरल व सुग्राह्य विधि आगमन विधि (विश्लेषण विधि) को माना जाता है। इस विधि में पहले उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण का विश्लेषण करके नियम निकाला जाता है। इसमें रटने की आवश्यकता नहीं होती है। पुस्तकालय, विद्यालय, हिमालय आदि शब्दों के उदाहरण देकर अ+आ=आ का नियम सीखाया जा सकता है।

➤ कौनसी व्याकरण शिक्षण की प्राचीन एवं परम्परागत शिक्षण विधि है-

- (1) निगमन विधि
- (2) आगमन विधि
- (3) भाषा संसर्ग विधि
- (4) प्रयोग प्रणाली (1)

व्याख्या- निगमन विधि जिसे सूत्र प्रणाली भी कहते हैं, व्याकरण शिक्षण की प्राचीन एवं परम्परागत शिक्षण प्रणाली है। इस विधि में छात्रों को पहले नियम या सूत्र बता दिये जाते हैं, इन्हीं के आधार पर छात्र उदाहरण को याद कर लेते हैं। इस विधि

में रटने पर अधिक बल दिया जाता है।

➤ लिखित कार्य में संशोधन की आवश्यकता होती है-

- (1) छात्रों की वर्तनी सुधारने के लिए
- (2) शिक्षक के शिक्षण कार्य की जाँच करने के लिए
- (3) छात्रों का उच्चारण सुधारने के लिए
- (4) उपरोक्त सभी (1)

व्याख्या- लिखित कार्य के संशोधन के माध्यम से छात्र में भाषा की व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ, वर्तनी की अशुद्धि, लिपि की अशुद्धि, प्रत्यय-उपसर्ग की अशुद्धि इत्यादि में सुधार किया जा सकता है। छात्रों में उच्चारण संबंधी सुधार मौखिक कार्यों के अंतर्गत आता है।

➤ वार्षिक योजना प्रमुख रूप से उपयोगी है-

- (1) शिक्षक के लिए (2) छात्रों के लिए
- (3) अभिभावक के लिए
- (4) विद्यालय के लिए (1)

व्याख्या- वार्षिक योजना अध्यापक को समय-समय पर यह बताती है कि उसे अब क्या और करना शेष रह गया है। वार्षिक योजना बनाते समय उपलब्ध समय, पाठ्य वस्तु, शिक्षण विधि, सहायक सामग्री, गृहकार्य, मूल्यांकन इन सभी का ध्यान रखा जाता है। यह अध्यापक को प्रभावी शिक्षण के लिए प्रेरित करती है।

➤ हर्बर्ट की पाठ योजना में कौनसा क्रम नहीं है-

- (1) स्पष्टता (2) संबंध
- (3) व्यवस्था (4) अनुशासन (4)

व्याख्या- हर्बर्ट शिक्षाशास्त्री ने पाठ शिक्षण का एक क्रम निर्धारित किया जिसके क्रम से चार चरण निर्धारित किए गए- प्रथम स्पष्टता- विषय वस्तु को छात्रों के सामने स्पष्टतया उपस्थित करे, दूसरा संबंध- दिया गया ज्ञान पूर्व ज्ञान से संबद्ध हो, तीसरा व्यवस्था- ज्ञान को युक्तियुक्त एवं संगत क्रम में स्थापित किया जाये, तथा चौथा प्रयोग- छात्र नवीन ज्ञान का नवीन परिस्थितियों में प्रयोग कर सके।

➤ भावों और विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है-

- (1) भाषा (2) रचना
(3) कविता (4) गद्य (2)
- सहशैक्षिक कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य है-
(1) बालक का बौद्धिक विकास करना
(2) बालक का मानसिक विकास करना
(3) सर्वांगीण विकास करना
(4) शारीरिक विकास करना (3)
- भाषा से संबंधित सहशैक्षिक कार्यों का क्षेत्र है?
(1) सांस्कृतिक कार्यक्रम
(2) सामाजिक कार्यक्रम
(3) साहित्यिक कार्यक्रम
(4) सांस्कृतिक क्रियाकलाप (3)
- नैदानिक तथा उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया कब तक चलती रहनी चाहिए?
(1) जब तक छात्र चाहे
(2) जब तक अध्यापक चाहे
(3) जब तक विद्यालय में समय मिले
(4) जब तक छात्रों की कमजोरी दूर न हो (4)
- बालकों की सीखने संबंधी कठिनाइयों का पता लगाने की प्रक्रिया ही शैक्षणिक निदान है। यह परिभाषा है?
(1) श्री निरंजन कुमार सिंह
(2) श्री निरंजन आचार्य
(3) श्री निरंजन शाह
(4) श्री निरंजन भट्ट (1)
- शैक्षणिक निदान की निम्न में से कौनसी विधि नहीं है?
(1) मेडिकल टेस्ट विधि
(2) देखो कहो विधि
(3) साक्षात्कार विधि
(4) अभिलेख विधि (2)
- कक्षा कार्य की उपयोगिता है-
(1) बालकों के व्यस्त रहने के कारण अनुशासन बना रहता है
(2) सीखा हुआ ज्ञान पक्का होता है
(3) छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है
(4) उपरोक्त सभी (4)
- गृहकार्य की उपयोगिता है-
(1) स्वाध्याय करने का अभ्यास
(2) स्वचिंतन, मनन करने की शक्ति का विकास
(3) अतिरिक्त समय का सदुपयोग
(4) उपरोक्त सभी (4)
- हर्बर्ट की पंचपदीय पाठ योजना के स्पष्टता वाले सोपान को प्रस्तावना और प्रस्तुतिकरण दो भागों में बांटने वाले थे-
(1) सलर (2) राइन
(3) मॉरीशन (4) रूडोल्फ (1)
- हर्बर्ट की पंचपदीय पाठ योजना में उद्देश्य को जोड़ने वाले शिक्षाशास्त्री थे-
(1) राइन (2) सलर
(3) मॉरीशन (4) रूडोल्फ (1)
- पाठ योजना का महत्त्व है-
(1) अध्यापक का कार्य नियमित, नियोजित व व्यवस्थित होता है
(2) अध्यापक का समय व शक्ति की बचत होती है
(3) अध्यापक की मौलिकता में अंतर नहीं आता
(4) उपरोक्त सभी (4)
- प्रस्तावना में पूछे गए प्रश्न होने चाहिए-
(1) विषय वस्तु के जटिल प्रश्न
(2) पूर्व ज्ञान पर आधारित
(3) गृहकार्य से संबंधित
(4) इनमें से कोई नहीं (2)
- पाठ योजना में मूल्यांकन के लिए कौनसा कथन सही है-
(1) कम से कम 3 प्रश्न हो
(2) प्रश्न वस्तुनिष्ठ हो
(3) प्रश्न उद्देश्यनिष्ठ हो
(4) उपरोक्त सभी (4)
- गृहकार्य का सबसे बड़ा लाभ है-
(1) छात्र में स्वाध्याय की आदत का विकास
(2) आत्मा विश्वास का आना
(3) विषयवस्तु को आत्मसात करना
(4) इनमें से कोई नहीं (1)
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन का प्रयोजन है-
(1) भाषा के प्रति रुचि जागृत करना
(2) विषय की जाँच करना

- (3) अगली कक्षाओं में क्रमोन्नति देना
(4) उपरोक्त सभी (4)
- ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है-
(1) भाषा (2) वर्ण
(3) शब्द (4) वाक्य (2)
- पढ़कर अर्थ ग्रहण करने का उद्देश्य पूरा होता है, वह क्रियाकलाप है-
(1) प्रश्न पूछना (2) शब्द विश्लेषण
(3) वार्तालाप (4) वाचन (4)
- मानव प्रेम की ओर अग्रसर होना। अपेक्षित परिवर्तन जिस उद्देश्य की संभावना है, वह है-
(1) अर्थग्रहण (2) भाषा तत्त्व
(3) अभिरुचि
(4) सद् प्रवृत्तियों का विकास (4)
- शुद्ध एवं स्पष्ट बोलने की योग्यता मिलती है-
(1) काठिन्य निवारण द्वारा
(2) विषय वस्तु विश्लेषण द्वारा
(3) उच्चारण संशोधन द्वारा
(4) वाचन द्वारा (4)
- व्याकरण के ज्ञान से भाषा बनती है-
(1) शुद्ध (2) अशुद्ध
(3) क्लिष्ट (4) स्वच्छंद (1)
- छात्र शुद्धतापूर्वक तभी लिख सकते हैं-
(1) जब अपनी त्रुटियों का ज्ञान हो
(2) उन त्रुटियों से अभिभावकों को परिचित कराया जाये
(3) जब छात्र को दंडित किया जाये
(4) जब शिक्षक उन त्रुटियों को सुधारने दे (1)
- रचनात्मक लेखन की कौनसी विधा अर्थग्रहण करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है-
(1) निबंध (2) अपठित
(3) कहानी (4) पद्य (3)
- गद्य शिक्षण की विधि है-
(1) अभिनय विधि (2) अर्थ बोध विधि
(3) खंड काव्य विधि
(4) नाटक विधि (2)
- रूपरेखा शिक्षण पद्धति संबंधित है-
(1) कहानी शिक्षण से
(2) नाटक शिक्षण से
(3) पद्य शिक्षण से (4) रचना शिक्षण से (4)
- कौनसी पद्धति छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं है?
(1) मॉन्टेसरी (2) डाल्टन
(3) प्रोजेक्ट (4) नाटक (3)
- पाठ योजना तैयार करने के पीछे शिक्षक का उद्देश्य होता है-
(1) छात्र का व्यस्त रहना
(2) प्रभावी शिक्षण (3) अनुशासन बनाये रखना
(4) इनमें से कोई नहीं (2)
- श्रोता के मनोभावों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली साहित्य की विधा है-
(1) पद्य शिक्षण (2) नाटक शिक्षण
(3) कहानी शिक्षण (4) गद्य शिक्षण (1)
- अध्यापक द्वारा कक्षा में किए गए वैयक्तिक वाचन को कहते हैं-
(1) सामूहिक वाचन
(2) आदर्श वाचन (3) अनुकरण वाचन
(4) सस्वर वाचन (2)
- भाषायी कौशल का सही क्रम है-
(1) सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना
(2) सुनना, पढ़ना, लिखना, बोलना
(3) सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
(4) इनमें से कोई नहीं (3)
- कविता पाठ करने से विद्यार्थियों की किस अभिव्यक्ति का विकास होता है-
(1) मौखिक अभिव्यक्ति
(2) लिखित अभिव्यक्ति का
(3) श्रवण कौशल (4) इनमें से कोई नहीं (1)
- त्रिभाषा सूत्र का मुख्य संदर्भ कहाँ है-
(1) माध्यमिक स्तर पर
(2) उच्च स्तर पर (3) पूर्व माध्यमिक स्तर पर
(4) उच्चतर माध्यमिक स्तर (1)
- गद्य शिक्षण में सर्वाधिक महत्त्व किसका है-
(1) मौन पठन (2) सस्वर पठन
(3) आदर्शवाचन (4) कोई नहीं (1)
- काव्य शिक्षण में किसका महत्त्व अधिक है-

- (1) विचार संश्लेषण विधि
(2) सस्वर वाचन (3) मौन वाचन
(4) आदर्श वाचन (4)
- चित्रों पर प्रश्न करके रचना का शिक्षण देना कौनसी विधि है-
(1) वाक्य प्रधान विधि
(2) प्रश्नोत्तर विधि (3) चित्र रचना विधि
(4) खेल विधि (3)
- वर्णों का उच्चारण क्रम होता है-
(1) स्वर, व्यंजन, शब्द, वाक्य
(2) स्वर, व्यंजन, वाक्य, शब्द
(3) व्यंजन, वाक्य, शब्द, स्वर
(4) इनमें से कोई नहीं (1)
- पेस्टलॉजी की लेखन शिक्षण विधि है-
(1) अनुकरण विधि (2) मॉन्टेसरी विधि
(3) खेल विधि (4) मौखिक विधि (1)
- व्याकरण शिक्षण के लिए कौनसी प्रणाली उपयुक्त नहीं है-
(1) सूत्र विधि (2) भाषा संसर्ग विधि
(3) निगमन विधि (4) प्रयोगशाला विधि (4)
- कौनसा वाचन क्रिया का सोपान नहीं है-
(1) आदर्श वाचन (2) अनुकरण वाचन
(3) प्रस्तावना वाचन (4) मौन वाचन (3)
- श्रवण कौशल विकास के अंतर्गत निम्न शक्तियों का विकास आवश्यक है-
(1) अंतर बोध शक्ति
(2) धारण शक्ति (3) बोधन शक्ति
(4) उपर्युक्त शक्ति (4)
- पढ़ने में उपयोगी किंतु लिखने में कठिन विधि है-
(1) वाक्य द्वारा अक्षर परिचय विधि
(2) वर्ण परिचय विधि
(3) शब्द द्वारा अक्षर परिचय
(4) उपर्युक्त सभी (4)
- खेल-खेल में भाषा की आरंभिक शिक्षा दी जाती है-
(1) ध्वनि साम्य विधि में
(2) साहचर्य विधि में
(3) प्रश्नोत्तर विधि में
(4) सामूहिक पाठ विधि में (2)
- परम्परागत आरंभिक शिक्षण है-
(1) स्वरों को लिखना सीखाना
(2) व्यंजनों को लिखना सीखाना
(3) स्वरों और व्यंजनों का क्रमिक रूप से लिखना सिखाना
(4) उपरोक्त सभी (3)
- किस पद्धति में बालक स्वयं अपना सुधार करता है, वह पद्धति है-
(1) अनुकरण विधि (2) जेकॉटाट विधि
(3) प्रश्नोत्तर विधि (4) कहानी विधि (2)
- प्राथमिक स्तर पर छात्रों को मातृभाषा में पढ़ाना बेहतर होता है क्योंकि इससे-
(1) बच्चों की पढ़ाई स्वाभाविक वातावरण में होती है
(2) बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है
(3) बच्चों की बुद्धि का तेजी से विकास होता है
(4) आगे चलकर उच्च शिक्षा ग्रहण/पास करने और नौकरी मिलने की संभावना बढ़ जाती है (1)
- भाषा सीखने का सबसे अच्छा तरीका है-
(1) टेक्स्ट बुक को पढ़कर
(2) सहायक किताब पढ़कर
(3) समाचार पत्र पढ़कर
(4) वाद-विवाद द्वारा (1)
- किसी कौशल को सीखने का सबसे अच्छा तरीका क्या है-
(1) सुनकर (2) पढ़कर
(3) कार्य करके (4) देखकर (3)
- कक्षा का एक छात्र, कक्षा में बिल्कुल भी नहीं बोलता है उसकी अभिव्यक्ति योग्यता को विकसित करने के लिए शिक्षक को कौनसा उपाय अपनाना चाहिए-
(1) विचार-विमर्श द्वारा
(2) कक्षा क्रियाकलाप में सहभागिता के लिए बच्चों को उत्साहित करना चाहिए
(3) ऐसे कुछ खेलों/ कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिसमें बच्चे बोलना चाहें
(4) उन छात्रों को अच्छे अंक देना जिनकी अभिव्यक्ति अच्छी हो (2)

Daily Current Affairs एवं अन्य Free Study Material PDF के लिए अभी Download करें हमारी Apps

